Ankur's UPload
राज
कामिक्स विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 121
जंग
इस विशेषांक के साथ टैटू मुफ्त
सुपर कमांडो ध्रुव
Uploaded for RFN Community

दुश्मन को मारने के लिए हथियार चलाना तो लाखों हाथों को आता है... लेकिन खास निशाने को नष्ट करने के लिए खास हथियार बनाना कुछ चुनिन्दा हाथों के बस की बात है।... जुर्म की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दुनिया के खास निशाने पर कई सालों से कुछ खास लोग विद्यमान हैं। नागराज, डोगा, स्टील, तिरंगा... और अब शक्ति। लेकिन जो दो कांटे जुर्म और आतंकवाद की छाती में काफी गहरे धंसे हुए हैं, वे हैं नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव! और आज इनमें से एक कांटा निकलने वाला है; क्योंकि एक खास दिमाग और एक जोड़ी हाथों ने आज वह हथियार बना लिया है, जो सुपर कमांडो ध्रुव का नामोनिशान तक मिटा सकता है... और इसे चलाने की जरूरत नहीं है, यह खुद चलता है—
नक्षत्र हर चीज में तुझसे बढ़कर है ध्रुव! दिमाग में, ताकत में, और कौशल में भी! मेरी उम्र भी तुझसे ज्यादा लम्बी है। क्योंकि कुछ ही पलों में तेरी जिन्दगी और मौत के बीच का जो फासला अभी तक कई सालों का था, वह सिमटकर एक पल का रह जाएगा!...
... लेकिन नक्षत्र जिएगा! और अपनी बाकी जिन्दगी तेरी हस्ती मिटने की खुशी मनाने में बिताएगा!...
... आज खत्म हुआ मेरा वह इन्तजार, जिसमें एक-एक पल एक-एक युग की तरह बीते...
... खत्म हो गया तू और जीत गया नक्षत्र यह...
जंग
कथाः जौली सिन्हा
चित्रः अनुपम सिन्हा
इंकिंगः विट्ठल कांबले
सुलेख व रंगः सुनील पाण्डेय
सम्पादकः मनीष गुप्ता

कहते हैं कि खोजने से तो 'भगवान' भी मिल जाते हैं। और चाहो तो शैतान भी-
और इस बार खोजने वाले की लम्बी खोज आकर खत्म हुई थी, राजनगर से लगभग पचपन किलोमीटर की दूरी पर स्थित सीसपुर शहर में लगे 'रोहिणी सर्कस' पर-
जो मशहूर था तो सिर्फ एक महान गुणी कलाकार नक्षत्र के कारण। जो जब अपने कारनामें दिखाता था तो मौत भी पीछे की सीटों पर दुबक जाती थी-
ऐसे कारनामें, जो न तो पहले कभी किसी ने सोचने की जहमत उठाई और न ही करने की हिम्मत दिखाई-
सर्कस जगत में ध्रुव के बाद यह पहली बार हो रहा है कि सर्कस के शो किसी एक कलाकार के दम पर हाउस-फुल जा रहे हैं।...
...क्योंकि इस कलाकार नक्षत्र का पालन-पोषण भी संयोगवश ध्रुव की तरह ही हुआ है! इसीलिए यह भी उसी की तरह हर फन में माहिर है!...
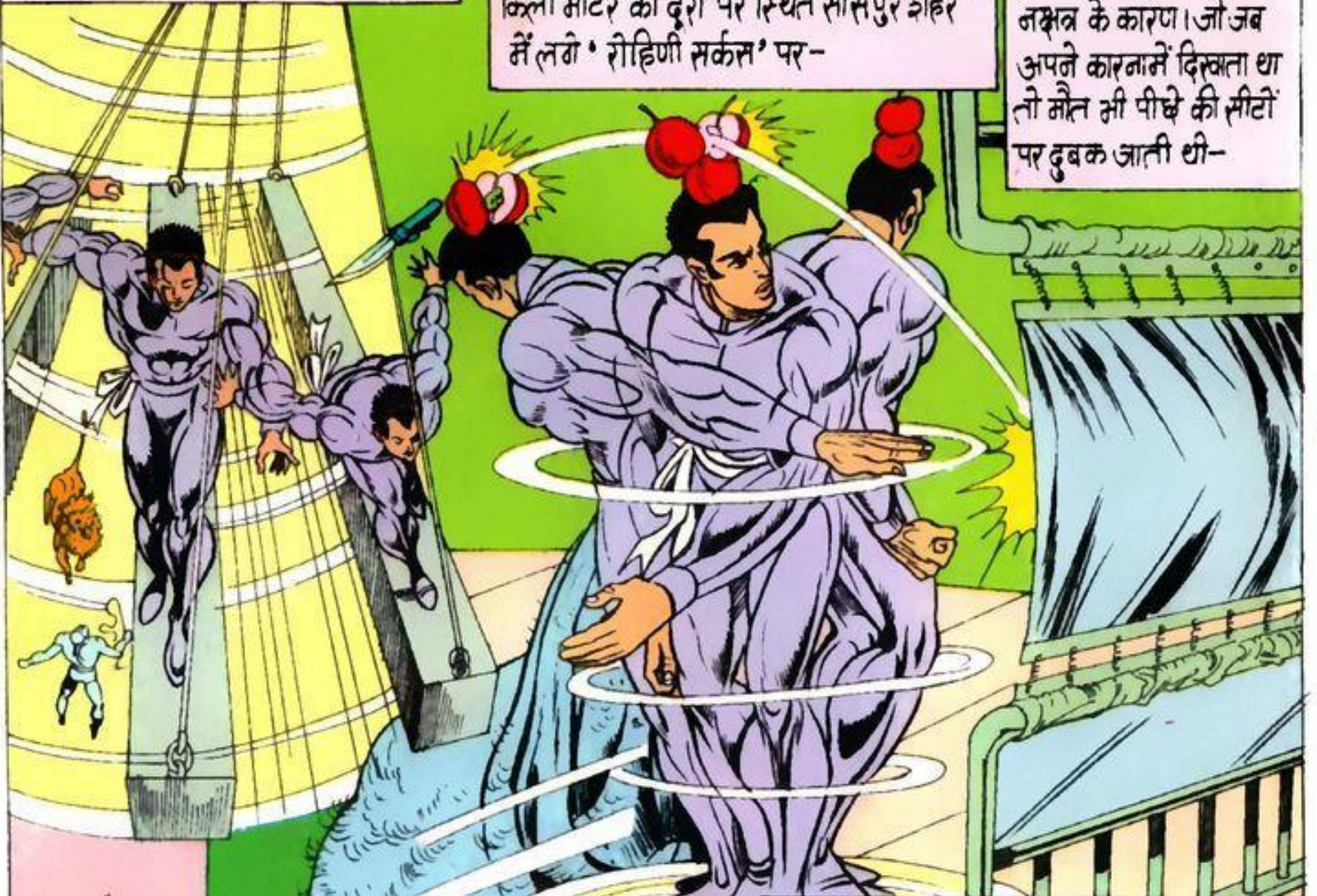
★इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें- प्रतिशोध की ज्वाला

दोस्त बनाने में वक्त लगता है शॉट! दुश्मन बनाने में नहीं। मैं इसकी सीधी दुश्मनी ध्रुव से नहीं कराऊंगा! जरा तिरछी कराऊंगा! तुमने कमिश्नर राजन के बारे में वह पता लगाया जो मैंने कहा था, चेरी?
हां! वह हर एक तारीख को अपनी तनख्वाह के पैसे बैंक से निकालने जाता है! क्योंकि उसकी तनख्वाह सीधी बैंक में ही जमा करा दी जाती है। मैंने अपने सर्कस का एकाउंट भी वहीं खुलवा दिया है!
वेरी वेरी गुड! मुझे तुम्हारी यही अदा पसन्द है चेरी! तुमसे एक काम शुरू करने को कहो तो तुम उसे खत्म करके ही मेरे पास आती हो!
एक तारीख तो परसों ही है। हमको भी अपने सर्कस कर्मियों को तनख्वाहें बांटनी हैं। जरा नक्षत्र के बाप आकाश को बुलाना। परसों उसे भी हमारे साथ बैंक जाना है! वहीं पर उसका एकाउंट बन्द करा देंगे!
किसी भी महीने की आखिरी तारीख की रात लुटेरों के लिए काफी व्यस्त होती है—
तुम सरकारी कर्मचारियों को हम दूर से ही ताड़ लेते हैं बेटे। हम तेरे बाप हैं! सारी तनख्वाह अकेले ही घर ले जाएगा क्या?
ऐसा है इस बार तू ये माल अपने बाप को दे दे! अगले महीने तू अपनी तनख्वाह घर ले जाना।
ये गलत बात है। छोड़ दो मुझे!
ले छोड़ दिया तुझे! अब चुपचाप पतली गली से निकल ले! वरना तेरी बोटी-बोटी वैसे ही काट डालेंगे जैसे एक महीने पहले तेरे ही एक भाई-बन्द को काट डाला था!
एक तो घूसखोर पैसे देने में आनाकानी कर रहा था और फिर बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगा था!
ता
ड़
ओह! मेरे बिना मेहनत किए ही तुमने सब-कुछ उगल दिया! वरना एक महीने से पुलिस वाले बेचारे न जाने किस-किस पर शक करते घूम रहे थे!
ये तेरी आवाज को क्या हुआ? ये... ये बदल कैसे गई?
अभी तो सिर्फ आवाज ही बदली है...

कातिल कितना भी मामूली अपराधी हो, पर होता तो हत्यारा ही है-

और अगर उसको यह अभास हो जाए कि वह पकड़ा जाने वाला है-

और उसे उम्रकैद या फांसी तक हो सकती है तो वह चूहे से भेड़िया बन जाता है-

तूने हम तक पहुंचकर गलती की है ध्रुव! सच्चाई जानकर तूने खुद अपनी ही चिता की लकड़ियां सजा ली हैं। अब हम तुझे भी जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।

दिमाग से पागल या क्रोध से पागल हो गए इन्सान की एक खासियत होती है, वह दूसरों को चोट पहुंचाने में तो एक खास आनन्द महसूस करता है-

लेकिन अपने शरीर की चोटों का उसे एहसास नहीं होता

वह तो बस, अपने प्रतिद्वंद्वी को फाड़ खाने के लिए बेताब रहता है–

लेकिन भेड़िए चाहे गिनती में जितने भी हों...

ढिशुम

...और शेर अकेला हो, फिर भी भेड़िए शेर का शिकार नहीं कर सकते।

भड़ाक

यह सत्य, शहर में भी उतना ही सत्य है–

जितना कि जंगल में–

अब जब तुम जेल में उम्रकैद काटोगे, तो काम भी करना पड़ेगा, तनख्वाह भी मिलेगी। और तब तुमको उसका महत्त्व पता चलेगा!

एक तारीख को बैंकों में काफी भीड़ भाड़ रहती है। कई कंपनी वाले इसी तारीख को अपने कर्मचारियों को तनख्वाहें बाटते हैं–
और कई लोग अपनी तनख्वाहें बैंक से निकालने आते हैं–
सीसूपुर में तो कोई ढंग का बैंक था नहीं आकाश! इसीलिए हमने राजनगर में अपना एकाउंट खुलवा लिया।
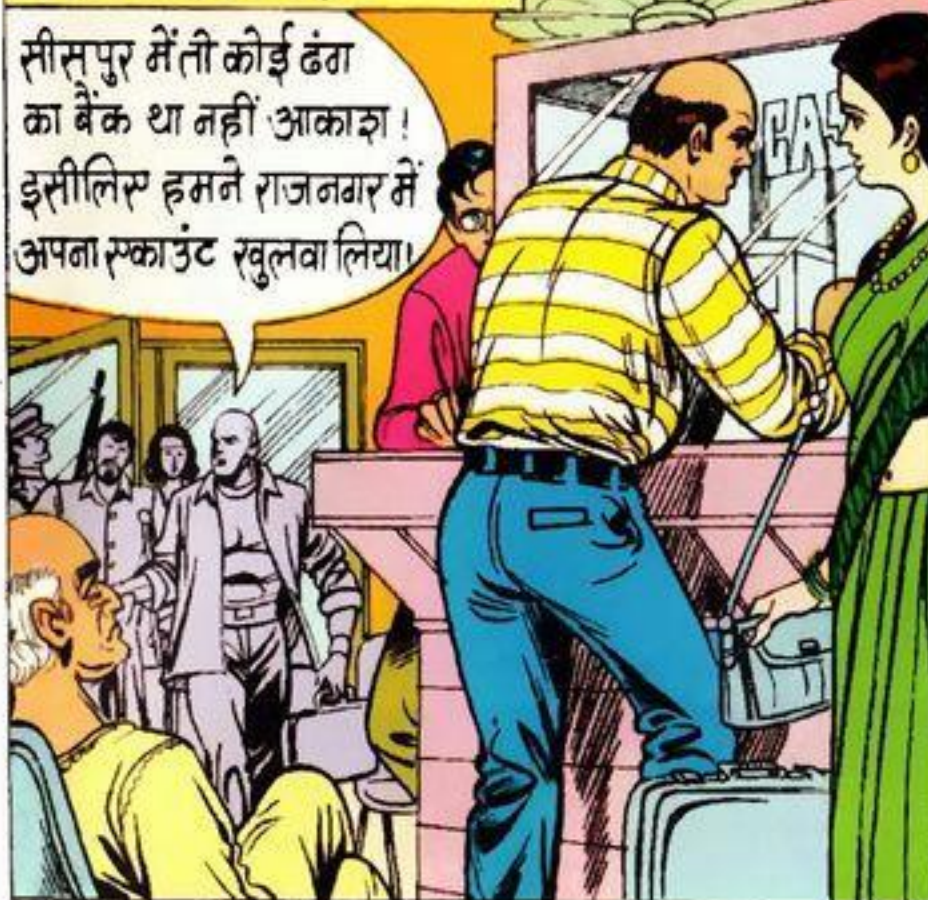
अच्छी तरह से समझ लो! क्योंकि हम अपने कलाकारों को हर हफ्ते तनख्वाहें बांटेंगे, और हर हफ्ते पैसे निकलवाने तुमको ही आना पड़ेगा!
लेकिन जरा सतर्क रहना! यहां पर लूटपाट की वारदातें काफी होती हैं। गुंडे बदमाश हमेशा ताक में रहते हैं।
आप निश्चिन्त रहिए चेरी जी! आकाश जान दे देगा पर पैसे नहीं देगा!
जाल बिछना शुरू हो गया था–

शिकार यानी आकाश उसमें फंस भी चुका था–
अब इन्तजार था तो बस शिकारी यानी कमिश्नर राजन का–
ये लो! इस बैंक में तो फटाफट काम होता है। पैसे मिल गए। अब चलो!
एक मिनट भोले बाबा! जरा पैसे तो गिन लें। कम निकले तो अपनी जेब से भरना पड़ेगा!
और समय भी तो काटना है। ये कमिश्नर राजन अब तक क्यों नहीं...

...आ गया! अब नाटक शुरू!
आ... आकाश! मारे गए! उस पिस्तौल वाले को देख रहे हो न? यहां का बहुत बड़ा गुंडा है। इसने शायद हमको दो लाख रुपए निकलवाते भी देख लिया है। बाहर निकलते ही हमको लूट लेगा! ऐसा करो, तुम यह ब्रीफकेस लेकर बाहर निकलो! हम इसका ध्यान बंटाते हैं!
ठी... ठीक है!...

★ जुबिस्को के बारे में जानने के लिए पढ़ें-प्रतिशोध की ज्वाला और बहरी मौत

धांयय

अगर अपनी योजना विफल होते देखकर चेरी बीच में न कूद पड़ती–

बचिए सर! वह आप पर गोली चलाने जा रहा है!

चेरी ने जानबूझकर, राजन मेहरा की ट्रिगर पर रखी उंगली को दबा दिया। एक घातक धमाका हुआ–

और निशानेबाज द्वारा दिशा पाई हुई गोली, आकाश के सीने और पीठ को फाड़ती हुई बाहर निकल गई–

आऽऽऽऽऽह!

एक चीख के साथ आकाश के प्राण-पखेरू उड़ गए–

यह तो मर गया! यह तुमने क्या किया? मुझ पर कूदी क्यों?

मु··· मुझे लगा कि वह आप पर गोली चलाने जा रहा है। मैं तो आपकी जान बचाने के लिए आप पर कूदी थी। मुझे क्या पता था कि आपसे गोली चल जाएगी!

ओफ्! डेम इट! खैर पुलिस हैडक्वार्टर को फोन करके मेरे पर्सनल गार्ड्स को बुलाओ!

बॉस का प्लान सफल हो गया था। कमिश्नर राजन के हाथों नक्षत्र का पिता आकाश मारा जा चुका था–

और नक्षत्र की दुश्मनी पुलिस कमिश्नर राजन मेहरा यानी ध्रुव के पिता से हो चुकी थी! दूसरे शब्दों में कहा जाए तो नक्षत्र की दुश्मनी ध्रुव से हो चुकी थी—

हमने बीच में आने की कोशिश की, पर तब तक कमिश्नर राजन, 'बैंक-लुटेरा' चिल्लाते हुए आकाश पर गोली चला चुका था!

पर क्यों? उसने मेरे पिता को लुटेरा क्यों बना दिया? उन्होंने तो जिन्दगी में एक चींटी तक को नहीं मारा!
पुलिस वाले अनसुलझे केस, सुलझाने का नाटक करने के लिए अक्सर ऐसा करते हैं! किसी भी बेगुनाह को गोली मार दी, और उस पर तीन-चार केस करने का इल्जाम मढ़ दो!
पापा की... सुबुक... लाश का क्या हुआ?
उसको पुलिस के पास से कब ला सकते हैं?

न, न, न, नक्षत्र! यह गलती कभी मत करना! पुलिस वालों के पास जाना भी मत!
क्योंकि अगर तुम उनके पास चले गए तो तुमको सच्चाई पता चल जाएगी!
हां, नक्षत्र! यह पता चलते ही कि तुम आकाश के बेटे हो, वे तुम पर भी कोई इल्जाम मढ़कर तुमको भी बन्द कर देंगे! ताकि तुम कभी, कुछ भी न कर सको!

तो मैं क्या करूं? क्या करूं मैं? भूल जाऊं अपने बाप को? भूल जाऊं सब कुछ?
नहीं! ये सब कभी मत भूलना!

भूलना है तो यह भूल जाओ कि तुम एक कमजोर इन्सान हो और इन कमीने पुलिस वालों की जूतों के नीचे रगड़ नहीं सकते!
छीन लो उनसे उनकी जिंदगियां, जिन्होंने हमसे हमारे वफादार बेकुसूर आकाश को छीना है! तुम्हारे पिता आकाश को तुमसे छीना है!
कुत्ते की मौत मारो उनको!

राजन मेहरा उस ईमानदार सरकारी कर्मचारियों में से थे, जिनका घर खर्च आज के जमाने में भी तनख्वाह द्वारा ही चलता था। शाम को-

ये लो रजनी! इस महीने की तनख्वाह!

थैंक गॉड! मैं अभी डिपार्टमेंटल स्टोर से सारा सामान मंगवा लेती हूं! दालें और तेल तो एकदम खत्म हो गए हैं!

पापा, सैलेरी ले आए! वा वाह!

पीछे हट! पहले मैं जाऊंगा! मैं बड़ा हूं न!

... उसने कहा कि 'यह पैसा' कलाकारों के लिए है! यानी वह आदमी किसी नाटक कंपनी या म्यूजिक बैंड से संबंधित हो सकता है!

हमने हर थाने में उसके फोटोग्राफ्स लगा दिए हैं! जल्दी ही कोई न कोई सूचना अवश्य मिलेगी! वैसे भी अभी मैं पुलिस हॉस्पीटल का एक चक्कर लगाऊंगा ही!...

... शायद वहां पर कोई जानकारी आई हो! लेकिन जब तक मैं यह जान नहीं लूंगा कि वह आदमी कौन था, और उसने ऐसा क्यों किया, तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा
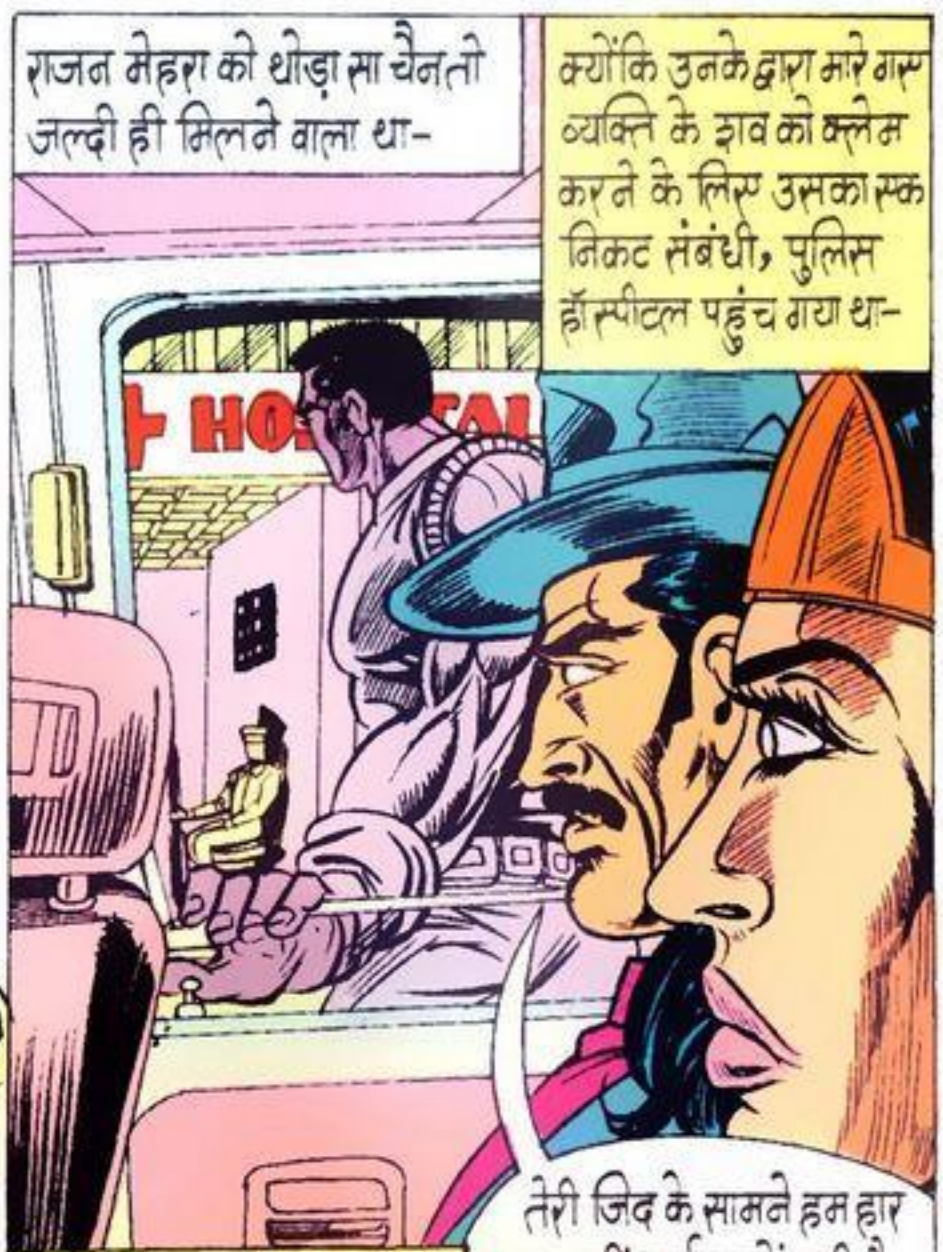
राजन मेहरा को थोड़ा सा चैन तो जल्दी ही मिलने वाला था-

क्योंकि उनके द्वारा मारे गए व्यक्ति के शव को क्लेम करने के लिए उसका एक निकट संबंधी, पुलिस हॉस्पीटल पहुंच गया था-

HOSPITAL

पर यह काम वह पुलिस वालों को बिना बताए करने वाला था-

तेरी जिद के सामने हम हार गए। यहीं मुर्दाघर में रखी है तेरे पिताजी की लाश!

ध्यान रखना! तुमको लाश एकदम चुपचाप लानी है! वरना अगर तुम पूछताछ के लिए पकड़ लिए गए तो तुम्हारे साथ हम सब भी मारे जाएंगे!

घबराओ मत! मैं इस काम के लिए तैयार होकर आया हूं! मुझे कोई पकड़ नहीं पाएगा!

सामने के रास्ते से जाऊंगा तो 'मेटल डिटेक्टर' लगे गेट से घुसना पड़ेगा, और फिर शायद तलाशी भी देनी पड़ेगी! कोई और रास्ता ढूंढता हूं!

शायद कोई खिड़की खुली मिल जाए!

जल्दी ही नक्षत्र को अपने मतलब की जगह मिल गई–

यह अस्पताल का लांड्री रूम लगता है! एक सफाई कर्मी पुरानी चादरें लाकर इसी कमरे में रख भी रहा है! यहीं से अन्दर घुसना चाहिए!

कुछ ही मिनटों बाद नक्षत्र एक ऐसे रूप में अस्पताल के कॉरीडोर में घूम रहा था जिसमें उसे पहचान पाना बड़ा मुश्किल था–

यहां तक तो आराम से आ गया! अब सिर्फ यह ढूंढना है कि मुर्दाघर कहां पर है, और उसमें पिताजी की लाश कहां पर रखी है?

नक्षत्र की यह छानबीन इतनी जल्दी खत्म होने वाली नहीं थी–

क्योंकि पुलिस कमिश्नर राजन मेहरा भी पुलिस अस्पताल पहुंच चुके थे-

ये कहां से आ गया?

अगर इसने बिस्ट्रो और मुझे पहचान लिया तो गड़बड़ हो जाएगी। यहां से फटाफट निकल लो!

★ मॉर्ग : मुर्दाघर

इसी वक्त- मुर्दाघर के बाहर-

ये रहा मुर्दाघर! पन्द्रह मिनट तक इधर-उधर घूमने के बाद मैं आखिरकार सही जगह पर पहुंच ही गया!

ऐ! कहां आ रहे हो? क्या काम है यहां पर? इस चादर में मुर्दा लिपटा है क्या?

एक मिनट! इसको तो पहले अस्पताल में कभी नहीं देखा! इसकी जेब पर 'आई कार्ड' भी नहीं लगा है!... और इस स्ट्रेचर पर क्या है? यह चादर तो हिल रही है? इसमें मुर्दा नहीं हो सकता!

MO

ठीक समझे! इसमें मुर्दा नहीं है!...
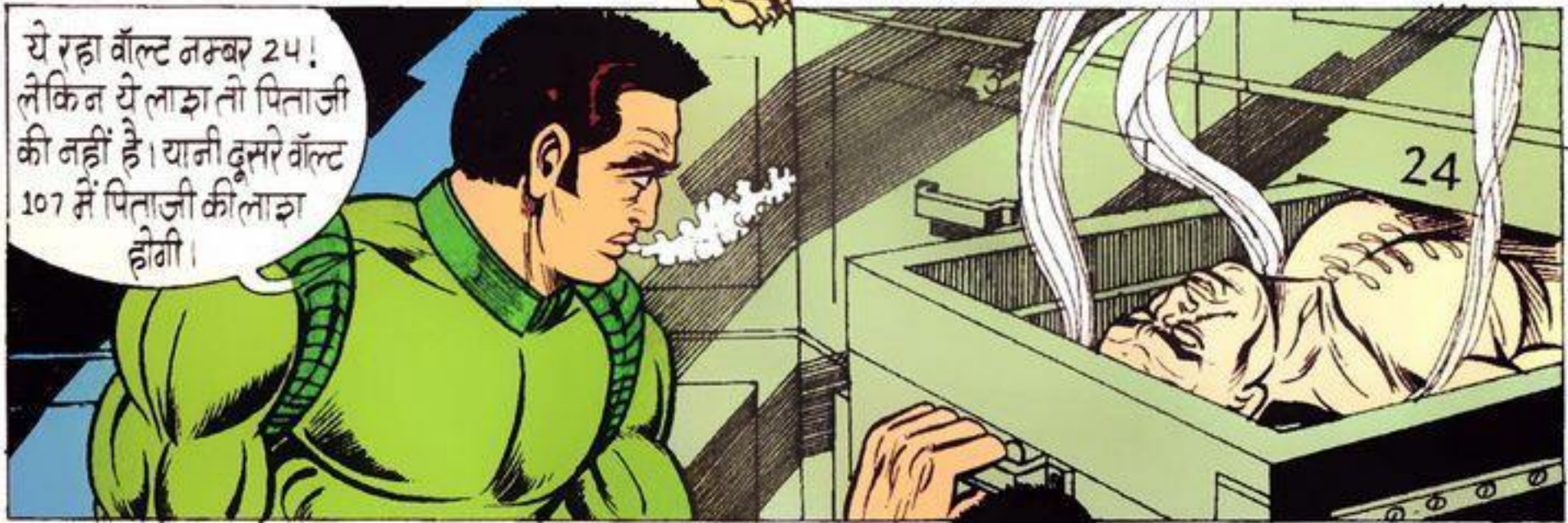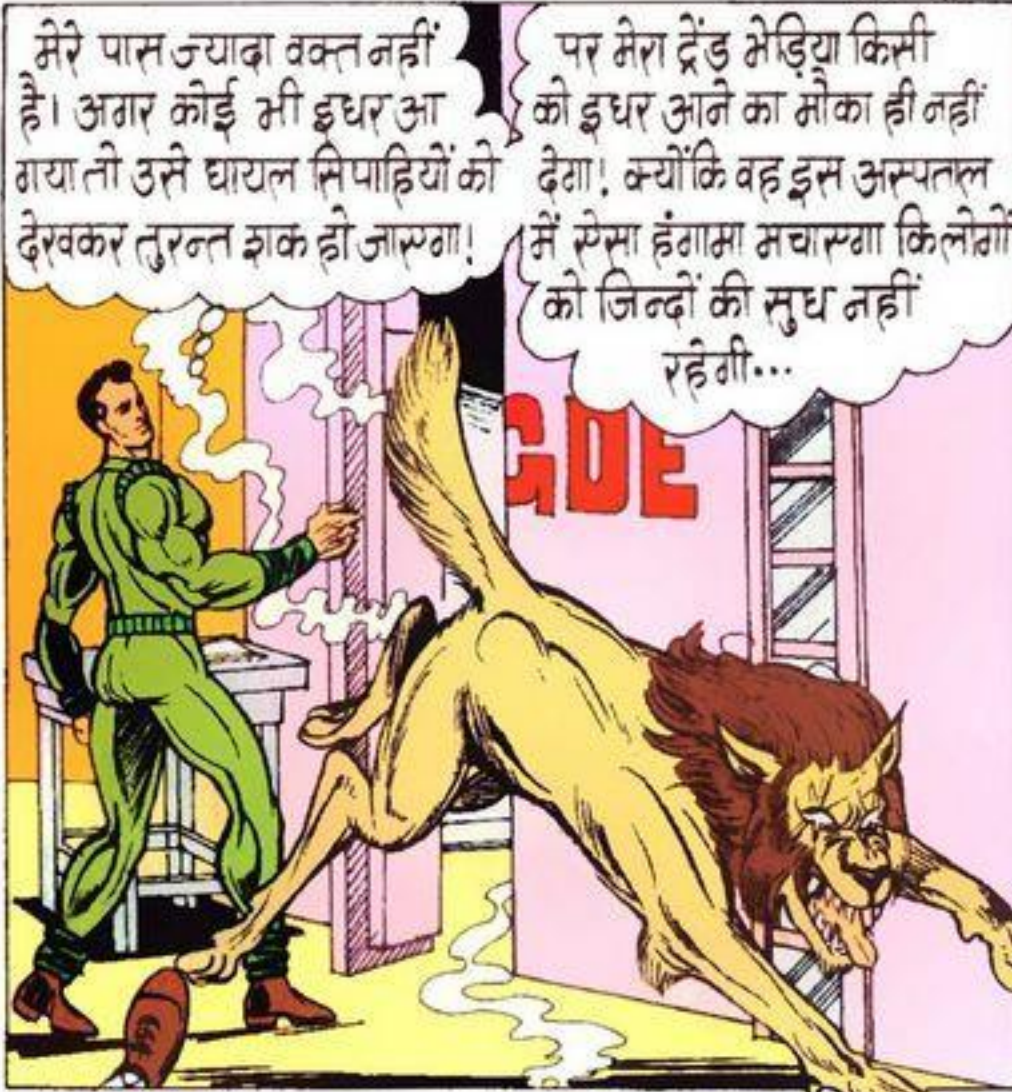
मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है। अगर कोई भी इधर आ गया तो उसे घायल सिपाहियों को देखकर तुरन्त शक हो जाएगा!
पर मेरा ट्रेंड भेड़िया किसी को इधर आने का मौका ही नहीं देगा! क्योंकि वह इस अस्पताल में ऐसा हंगामा मचाएगा कि लोगों को जिन्दों की सुध नहीं रहेगी...
...मुर्दों की तरफ कौन ध्यान देगा!
सिवाय मेरे!
ये रहा वॉल्ट नम्बर 24! लेकिन ये लाश तो पिताजी की नहीं है। यानी दूसरे वॉल्ट 107 में पिताजी की लाश होगी!
24
ओह! तो वह तुम्हारे पिता की लाश है। लेकिन इसको चोरी-छिपे ले जाने का क्या मतलब है? यानी कहीं कुछ गड़बड़ जरूर है! और पुलिस कमिश्नर होने के नाते मैं तुमसे कुछ सवालों के जवाब चाहता हूं!
ओह! तो तू है मेरे पिता का हत्यारा कमिश्नर राजन! तू शायद किसी और कॉरीडोर से यहां आ गया होगा! वरना मेरा भेड़िया पहले ही तुझे फाड़ खाता!... खैर!

कहानी 19 पेज से जारी

शायद बदला लेने का मौका भगवान मुझे ही देना चाहता है!
कब वह फोल्डिंग-चाकू नक्षत्र के हाथ में आ गया-
कब वह खुला-
किर्रर्र
र्रर्र
और कब हवा में उछाल मार गया-
यह राजन मेहरा की आंखें नहीं देख पाईं-
सट्ट
आऽऽऽऽह!
पिस्तौल उनके हाथ से छिटककर दूर जा गिरा-
और अगले ही पल नक्षत्र की ठोकर, उनकी ठोढ़ी से आ टकराई-

अस्पताल के अन्दर भगदड़ मची हुई थी। जिस फोटोग्राफर और इंस्पेक्टर का राजन मेहरा मुर्दाघर में इन्तजार कर रहे थे, वे खुद भी अस्पताल से बाहर भागने का रास्ता ढूंढ़ रहे थे-

मैं तो चला साहब!

मैं भी और पुलिस वालों को बुलाने का इन्तजाम करने जा रहा हूं। इस भेड़िए ने तो मेरी सारी गोलियां बेकार करवा दीं। और कोई भी गोली इसको छू तक नहीं पाई! ट्रेंड भेड़िया लगता है, पर ये अस्पताल में आया कहां से?

धांय

पुलिस वालों के साथ-साथ, अस्पताल में हो रहे इस हादसे की खबर किसी और तक भी पहुंचने वाली थी-

अस्पताल के मुर्दाघर में राजन मेहरा एक शक्तिशाली और कुशल दुश्मन से लड़ रहे थे-

क्योंकि वे इस जगह को अपना 'परमानेंट घर' बनाना नहीं चाहते थे-

आऽऽऽह!
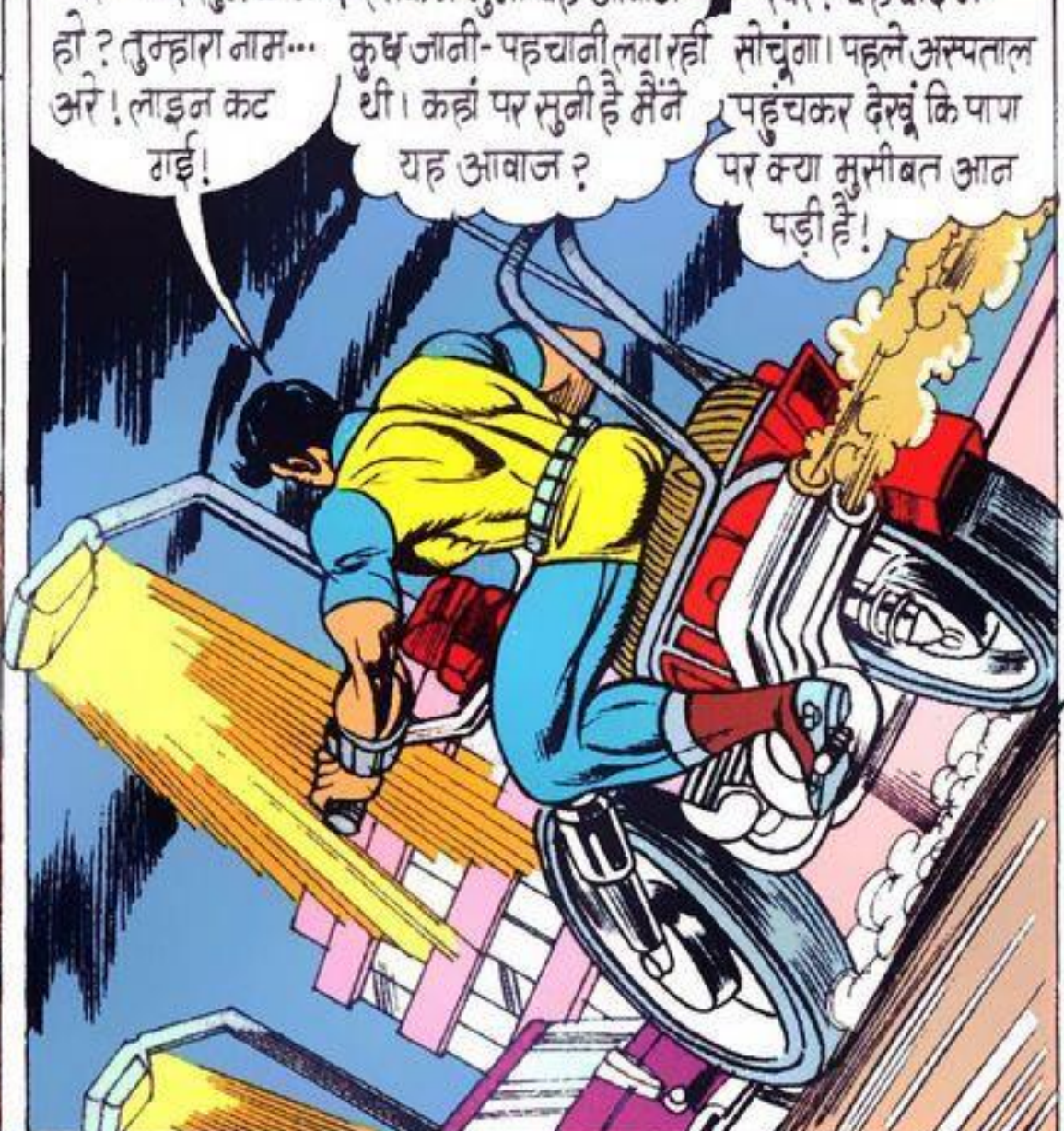
इसके शक्तिशाली वार तो जल्दी ही मेरे मस्तिष्क को बेहोशी की चादर से ढक देंगे!

इस पर अगर मैंने घातक हमला नहीं किया तो शायद यह मुझे जिंदा नहीं छोड़ेगा!

मेरी पिस्तौल वहां पड़ी है।...

...अगर मैं उस तक पहुंच सका तो काम बन जाएगा!

और कमिश्नर राजन के कुछ समझ पाने से पहले ही वह लाश उनके ऊपर थी-
आऽऽऽह!
धांय
नक्षत्र ने तेजी से पोस्टमार्टम-स्लैब' पर रखे, पोस्टमार्टम करने के औजारों में से हथौड़ा खींच लिया-
आऽऽऽह!
और राजन मेहरा कराह उठे-
आज उनको खुद अपनी जान बचानी मुश्किल लग रही थी-
क्योंकि अस्पताल में तबाही मचा रहा भेड़िया किसी को भी वहां तक पहुंचने ही नहीं दे रहा था-
ओ, भइए! तू क्या इसे जानवरों का अस्पताल समझकर आ धमका है। हम डॉक्टरों को मरीज बना देगा!
गर्र
बचाओ!
वैसे तो डॉक्टर ही, आमतौर से लोगों की जान बचाता है-
पर कभी-कभी डॉक्टर की जान बचाने के लिए-
तड़ाक्क
दूसरे किस्म के डॉक्टर की जरूरत पड़ती है। जो दवाई से नहीं, बल्कि लात-घूंसों से लोगों के दिमाग ठीक कर देता है। जैसे-
सुपर कमांडो ध्रुव!
आप लोग यहां से निकलिए! मैं इस आफत से निपटता हूं!

भेड़ियों की बोली तो मैं नहीं जानता! लेकिन इस पर कुत्तों की बोली आजमाकर देखता हूं! शायद काम बन जाए! ...
गर्रर्रर्रर्र !
ध्रुव के गले से एक गुर्राहट उभरने लगी-
और अगले ही पल दब गई-
ओह! इस पर तो मेरी बात का कुछ भी असर नहीं हुआ!
और आश्चर्य की बात तो यह है कि मैं इसका हमला भी नहीं बचा पाया!
यह भेड़िया किसी जंगल से नहीं आया है! काफी ट्रेंड लगता है! ... सीधे गले की नली पर हमला करता है! इसको पकड़ने का एक ही तरीका है! और वह है इसके जबड़ों को कस देना!
लेकिन इसके खुले जबड़ों को कसा कैसे जाए...
... आहा! एक रास्ता समझ में आ तो रहा है!
एक ही सेकंड बाद, ध्रुव उस भेड़िए के लिए तैयार था-
आओ, अब मुझ पर हमला करो, आ... आ...
गर्रर्र
आशा के अनुरूप ही भेड़िया फिर ध्रुव के गले की तरफ लपका-
लेकिन एक बार फिर ध्रुव का हाथ बीच में आ गया-
पर इस बार ध्रुव अपने हाथ को भेड़िए के जबड़े में कसने से बचा नहीं पाया-

पर... पर वह हाथ ध्रुव का नहीं था-
उस कमरे में रखे हुए कई कृत्रिम अंगों में से एक कृत्रिम हाथ था-
आहा! बन गया काम! इस कृत्रिम हाथ में अपना हाथ घुसाने से, भेड़िए ने इसी कृत्रिम हाथ को दबोच लिया!
कृत्रिम हाथ

अब ये कृत्रिम हाथ को पकड़े रहेगा, और उतनी ही देर में मैं इसके जबड़ों को दबाकर उन पर यह 'सर्जिकल टेप' लपेट दूंगा!

कुछ ही देर में भेड़िया टेप बंधनों में बंधा छटपटा रहा था-
वाह ध्रुव! तुमने तो इसको ऐसे पकड़ लिया, जैसे ये मेमना हो! भेड़िया नहीं!
तारीफ के लिए शुक्रिया डॉक्टर साहब! पर आपने मेरे पापा को कहीं देखा? वे यहीं पर आए थे!
तुम्हारे पापा यानी कमिश्नर साहब? हां, हां, आए तो हैं! वे एक इंस्पेक्टर से मुर्दाघर जाने की बात कर रहे थे!

ओह! धन्यवाद डॉक्टर साहब!
खैर, अब उनको ढूंढने की इतनी जल्दी नहीं है। क्योंकि फोन करने वाला जिस खतरे का जिक्र कर रहा था, वह जरूर भेड़िया ही रहा होगा!
और अब वह खतरा टल चुका है!
ध्रुव की सोच, इससे ज्यादा गलत नहीं हो सकती थी-

क्योंकि खतरा भेड़िया नहीं, उस भेड़िए का मालिक था-
मुर्दों का पोस्टमार्टम तो हमेशा से होता आया है कमिश्नर!...

आरी का वार राजन मेहरा की कमीज के साथ-साथ, उसकी खाल को भी काटता चला गया-

और पहले से ही हथौड़े की चोट खाए कमिश्नर राजन यह वार नहीं सह पाए। उनका दिमाग अंधेरे में डूबने लगा-

...तू मेरे बारे में चाहे न जाने, पर मैं तेरे बारे में सब-कुछ पता लगाकर आया हूं!...

...क्योंकि मुझे पता था कि अपने हत्यारे बाप को खत्म करने की राह में तू रोड़े जरूर अटकाएगा।

आऽऽह!

इतनी फुर्ती और इतना तेज वार। इसमें तो उसी भेड़िए जैसी फुर्ती है। कहीं यही तो उस भेड़िए को यहां नहीं लाया?
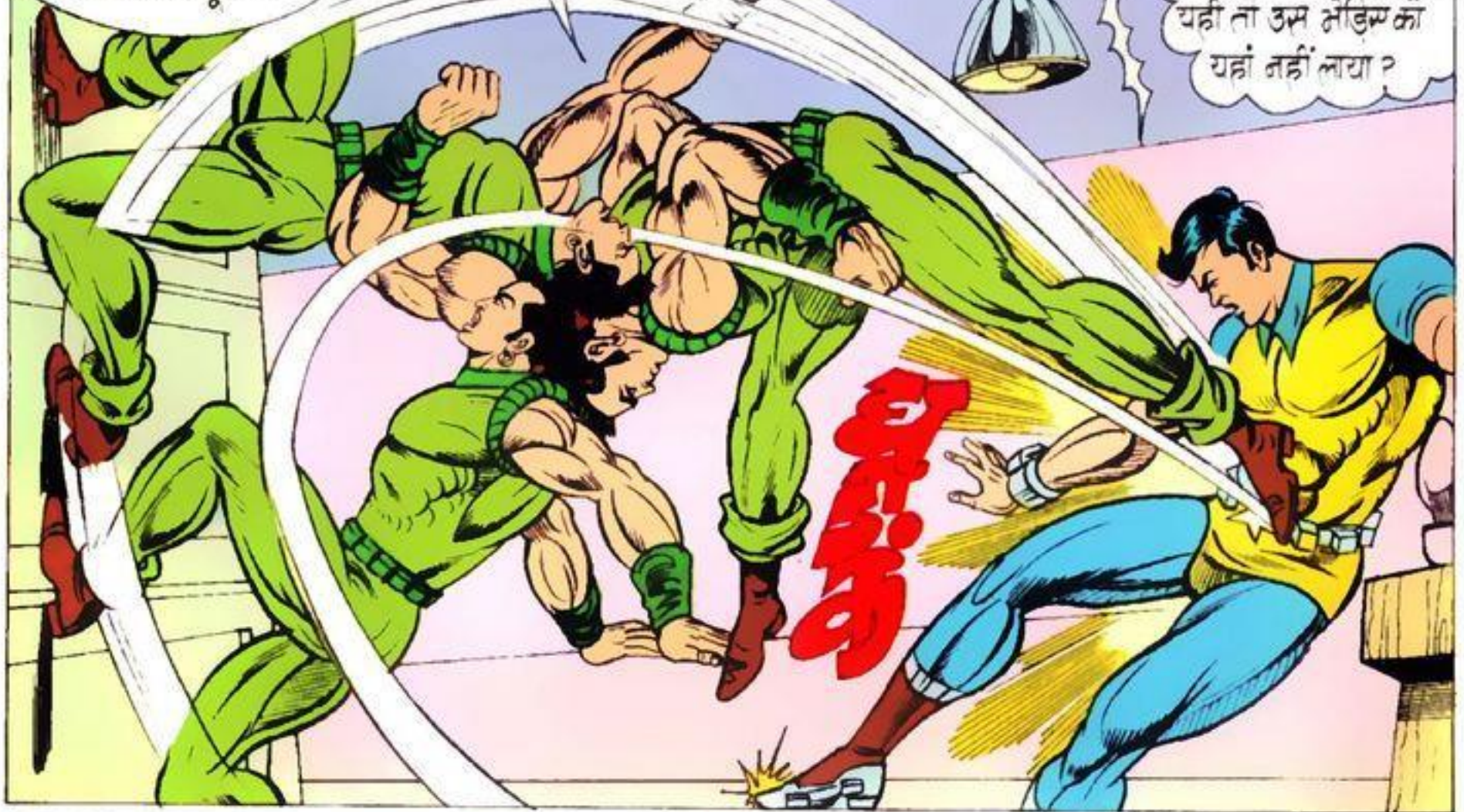
यह जरूर उसी आदमी का संबंधी होगा, जो पापा के हाथों बैंक में मारा गया था! क्योंकि पापा उसी के बारे में पता करने इस अस्पताल में आए थे! वह लाश भी यहीं मुर्दाघर में होगी। और यह लड़का पापा को अपने संबंधी का हत्यारा ठहराकर बदला लेने की कोशिश कर रहा है!...

...इसको सच्चाई समझानी होगी! और यह काम इसको काबू में करने के बाद ही किया जा सकता है।
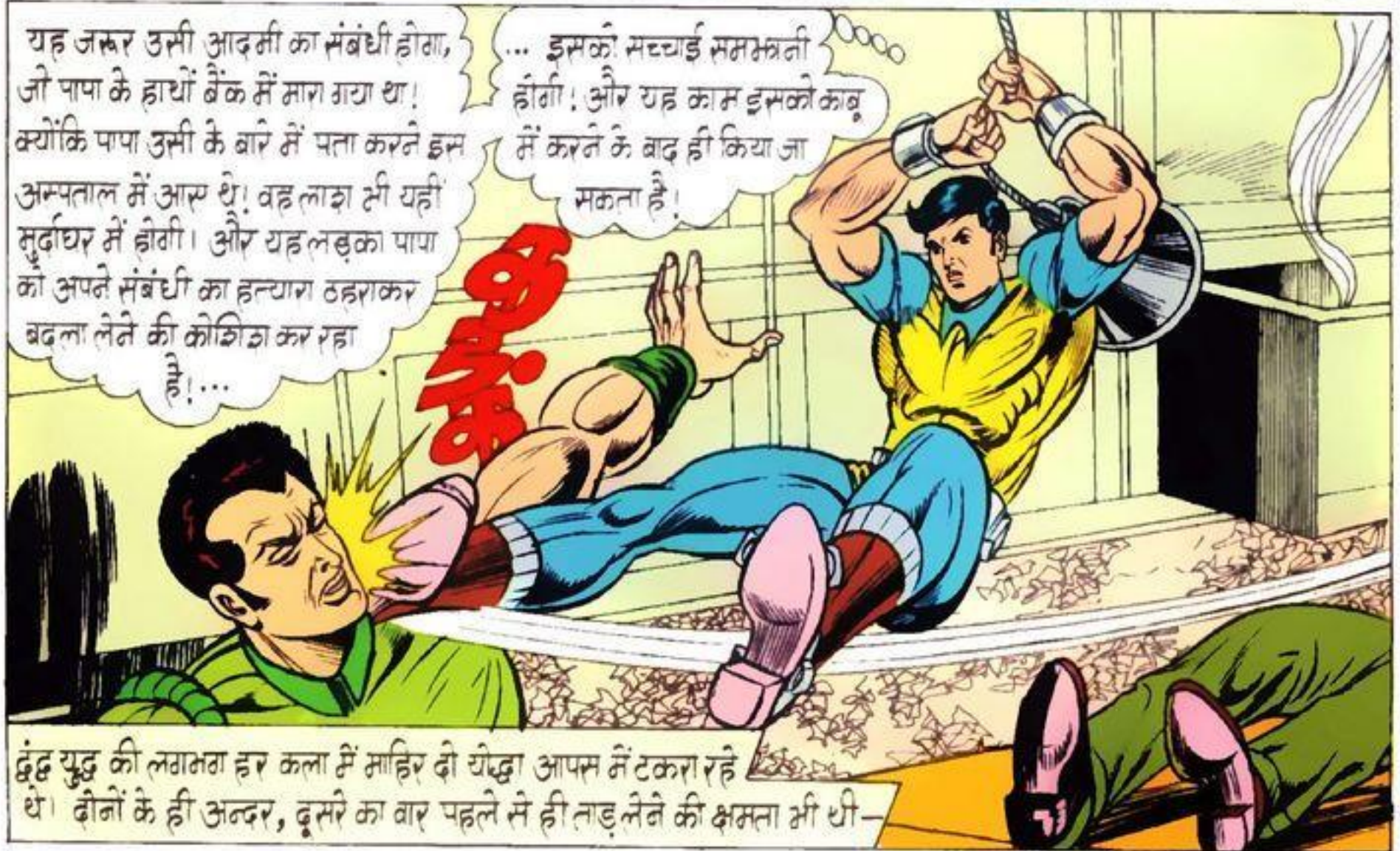
द्वंद्व युद्ध की लगभग हर कला में माहिर दो योद्धा आपस में टकरा रहे थे। दोनों के ही अन्दर, दूसरे का वार पहले से ही ताड़ लेने की क्षमता भी थी—

और उसे बचाकर, अपना वार कर सकने की काबलियत थी–

–यह लड़का हर चीज में मेरे बराबर लगता है! ताकत में, फुर्ती में, कौशल में!...

...लेकिन देखते हैं कि यह दिमाग में मेरी बराबरी कर सकता है या नहीं!

इसके लिए मुझे सिर्फ इसको अपनी तरफ खींचना पड़ेगा!...

★ फॉल्स सीलिंग: छत के नीचे, कृत्रिम शीटों द्वारा लगाई गई एक और छत, जो एयर कंडीशनरों के डक्ट वगैरह छिपाने के काम में आती है।

नक्षत्र आजाद हो गया था-

तू न ताकत में मेरी बराबरी कर सकता है ध्रुव, और न ही अक्ल में! क्योंकि तू है ध्रुव और मैं हूं नक्षत्र! मैं जानता था कि तू मुझे सामने से बाहर निकलने नहीं देगा!...

... इसीलिए मैं वॉल्ट के पीछे लगे 'कूलिंग-क्वायल्स' को तोड़कर एयरकंडीशनर की डक्ट के रास्ते से, डक्ट और फॉल्स-सीलिंग को तोड़कर बाहर आ गया। और तू वॉल्ट के मुंह को ही देखता रह गया!

पहले ही वार ने ध्रुव को काफी हद तक असंतुलित कर दिया था-

इस दूसरे वार ने उसके दिमाग को कुछ पलों के लिए अंधेरे में डुबो दिया-

कुछ सैकंडों बाद जब ध्रुव ने अपने-आपको संभाला, तब तक-
अरे! कमरा खाली है. न वह... क्या नाम है उसका... नक्षत्र नजर आ रहा है, और न ही पापा! कहां गए दोनों?
ध्रुव तेजी से बाहर की तरफ लपका-
सुनिए इंस्पेक्टर! आपने पापा को... यानी कमिश्नर साहब को कहीं देखा है?
नहीं! वे इधर तो नहीं आए! पिछले दस मिनट से मैं तो यहीं पर बैठा हुआ हूं!
ध्रुव ने अस्पताल के हर द्वार पर खड़े संतरियों तक से पूछताछ कर ली-
बाहर जाने के बाकी सारे रास्ते तो मैं चेक कर आया हूं! वहां से कोई बाहर नहीं गया! इस बात की संभावना तो बहुत कम है कि नक्षत्र या पापा मेनडोर से बाहर गए होंगे! यानी अभी तक वे अन्दर ही हैं!
ध्रुव अपनी ऊर्जा व्यर्थ कर रहा था-
क्योंकि नक्षत्र कमिश्नर राजन को दूसरे ही रास्ते से बाहर ले गया था-
... मजबूत केबल है! दो-दो शरीर का वजन संभाल लिया!... अब मुझे कोई रोक नहीं सकता!
लेकिन अब मैंने ध्रुव से सीधी दुश्मनी मोल ले ली है! और मैं उसको खत्म किए बगैर अपना काम खत्म नहीं कर सकता! मुझे और तैयारी करनी होगी!...
POLICE HOSPITAL

रात धीरे-धीरे गुजरती गई! लेकिन पुलिस कमिश्नर का कहीं पता नहीं चला–
हमने पूरे शहर में रेड अलर्ट घोषित कर दिया है! बाहर जाने के सारे रास्ते सील कर दिए गए हैं! अब कम से कम वह लड़का नक्षत्र कमिश्नर साहब को शहर से बाहर नहीं ले जा सकता!
हुम्म! लेकिन वह पापा को क्यों ले गया है? अगर उसे बदला लेना ही था, तो उनको वहीं पर... भगवान न करे... खत्म कर सकता था...
...पर इससे भी महत्त्वपूर्ण सवाल यह है कि पापा इस वक्त कहां पर हैं?

कमिश्नर राजन अब तक राजनगर की सीमा में ही थे–
तुम लोगों ने गाड़ी अस्पताल के सामने से हटाकर दूर क्यों खड़ी कर दी थी?
जानते हो, मुझे तुमको ढूंढने में कितनी दिक्कत हुई! अगर थोड़ा सा भी समय मुझे और रुकना पड़ता तो शायद मैं खुद ही पकड़ा जाता!

हम इसी कमिश्नर की नजरों से बचने के लिए आए थे! अगर ये हमको पहचान लेता तो हमारा भी तुम्हारे पिता जैसा हाल करता! ...

... पर तुम अपने पिता की लाश के बजाय इसको क्यों उठा लाए? और वह भी जिन्दा! इतनी मेहनत क्यों की?
एक वार से दो शिकार मारने के लिए! मुझे यहीं पर उतार दो!
यहीं पर? पर क्यों?

CONSTRUCTIONS
क्योंकि इसको लेकर शहर से बाहर नहीं जा सकते! ... अब तक हर रास्ते की नाकाबन्दी की जा चुकी होगी! ...
... वैसे भी मुझे यहीं तक आना था! अब तुम अपना मोबाइल फोन और ध्रुव का नम्बर मुझे देकर जाओ ...

बिस्ट्री और चेरी को तो यह पता नहीं चल पा रहा था कि वे क्या करें! लेकिन ध्रुव को यह जरूर पता चलने वाला था कि उसको क्या करना है-

चिन्ता मत करो मम्मी! पापा को कुछ नहीं होगा। वे सही-सलामत वापस आ जाएंगे!

कैसी पुलिस फोर्स है? उनकी नाक के नीचे से उनके कमिश्नर को उठा ले गए! और अब तक उनको ढूंढ भी नहीं पाए!

वैसे तो मैं भी उसे रोक नहीं पाया, मम्मी! एक तो हमारा सामना एक बहुत चालाक इंसान से है। और दूसरे मैंने यह सोचा ही नहीं था कि वह पापा को ले जाएगा।...

... मैं तो समझा कि वह अपने पिता की लाश ...

... ओह, फोन! जरूर पापा के बारे में ही खबर होगी!

मैं देखता हूं!

ट्रिन ट्रिन ट्रिन

हैलो! ध्रुव हियर!

तुम्हारा बाप मेरे पास है, ध्रुव!

हां! अगर तुम उसे वापस ले जाना चाहते हो तो तुमको मेरे पिता की लाश लेकर आना होगा! अकेले!

नक्षत्र!

मंजूर है। पर उनको कोई नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए!
सौदा होने तक कमिश्नर को कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा! यह मेरा वादा है। ध्यान से सुनो, तुम्हारे पास मोबाइल फोन है?
हां, है!
तो उसका नम्बर मुझे दो! और उसके बाद वह फोन और लाश लेकर सेंट्रल पार्क के गेट नम्बर 2 पर पहुंच जाओ!

इसी वक्त रोहिणी सर्कस में—
तुम लोग मूर्ख हो! इतनी सी बात पूछने चले आते हो! अब तुम यहीं पर रुको, बिस्ट्री! और चेरी तथा शॉट वापस जाकर नक्षत्र पर नजर रखो!
नक्षत्र की हर संभव मदद करना! दूर से! पर उसे ध्रुव को खत्म करने से पहले कमिश्नर को खत्म मत करने देना!
अब जाओ! देर मत करो!

देर तो कोई भी करना नहीं चाहता था! क्योंकि दांव पर बहुत कुछ लगा हुआ था—
नक्षत्र के पिता की लाश लाने के लिए मुझे पुलिस अधिकारियों को काफी समझाना पड़ा! वे खुद तो इसके साथ चलने को तैयार थे, पर इसे मुझे सौंपने के लिए नहीं! क्योंकि उनकी नजरों में यह पुलिस-प्रापर्टी है! खैर अब देखते हैं कि वह नक्षत्र क्या चाहता है!
TATA 407
वैसे तो मैं उसके कहे मुताबिक लाश को खुली गाड़ी में लेकर जा रहा हूं! ताकि वह देख सके कि मैं अकेला आया हूं!

वैसे दुश्मन काफी चालाक है! वह मुझे कोई प्लान बनाने का न तो समय देना चाहता है, और न ही मौका!...
खैर, अब तो जो करना है मुझे ही करना है! क्योंकि मेरे साथ अगर कोई और जा रहा है तो सिर्फ एक लाश!

ध्रुव ने सेंट्रल पार्क के गेट नम्बर 2 पर पहुंचने में ज्यादा वक्त नहीं लगाया-

और उसके वहां पहुंचते ही उसके मोबाइल की घंटी बज उठी-

तुम पार्क तक पहुंच चुके हो! अब यहां से तुम पुराने कब्रिस्तान जाओगे जहां मेन गेट के बाहर तुमको दीवार पर कोयले से लिखे निर्देश मिलेंगे!...

... अब तुम इस मोबाइल को यहीं पर तोड़ दो! चालाकी मत करना! मैं तुमको देख रहा हूं!

ध्रुव के सामने सारी शर्तें मानने के सिवाय और कोई चारा नहीं था-

वह मुझे देख रहा है! पर यहां पर उसे ढूंढने का कोई फायदा नहीं है। वह कहीं पर भी हो सकता है!...

... नक्षत्र काफी चालाक है। आखिर उसने क्या जाल बिछा रखा है?

नक्षत्र ने प्लान सोच-समझकर बनाया था-

अब ध्रुव चक्कर काटता हुआ 'कंस्ट्रक्शन साइट' पर पहुंचेगा! और मैं उससे पहले वहां पर पहुंच जाऊंगा! पर उसे इतना चक्कर कटवाकर मैंने यह पक्का पता कर लिया है कि वह अकेला ही आ रहा है!

लेकिन चेरी और शॉट को वहां पहुंचने में अभी थोड़ा समय और लगना था! जबकि ध्रुव वहां पर पहुंच चुका था–

यही है, 'नारंग कंस्ट्रक्शन साइट' जहां पर पहुंचने के निर्देश मुझे पुराने कब्रिस्तान के बाहर मिले थे! यहां पर सरकारी आदेश के अनुसार काम बन्द करवा दिया गया है। नक्षत्र ने मुझसे मुलाकात करने के लिए अच्छी जगह चुनी है।...

...पर वह है कहां पर?
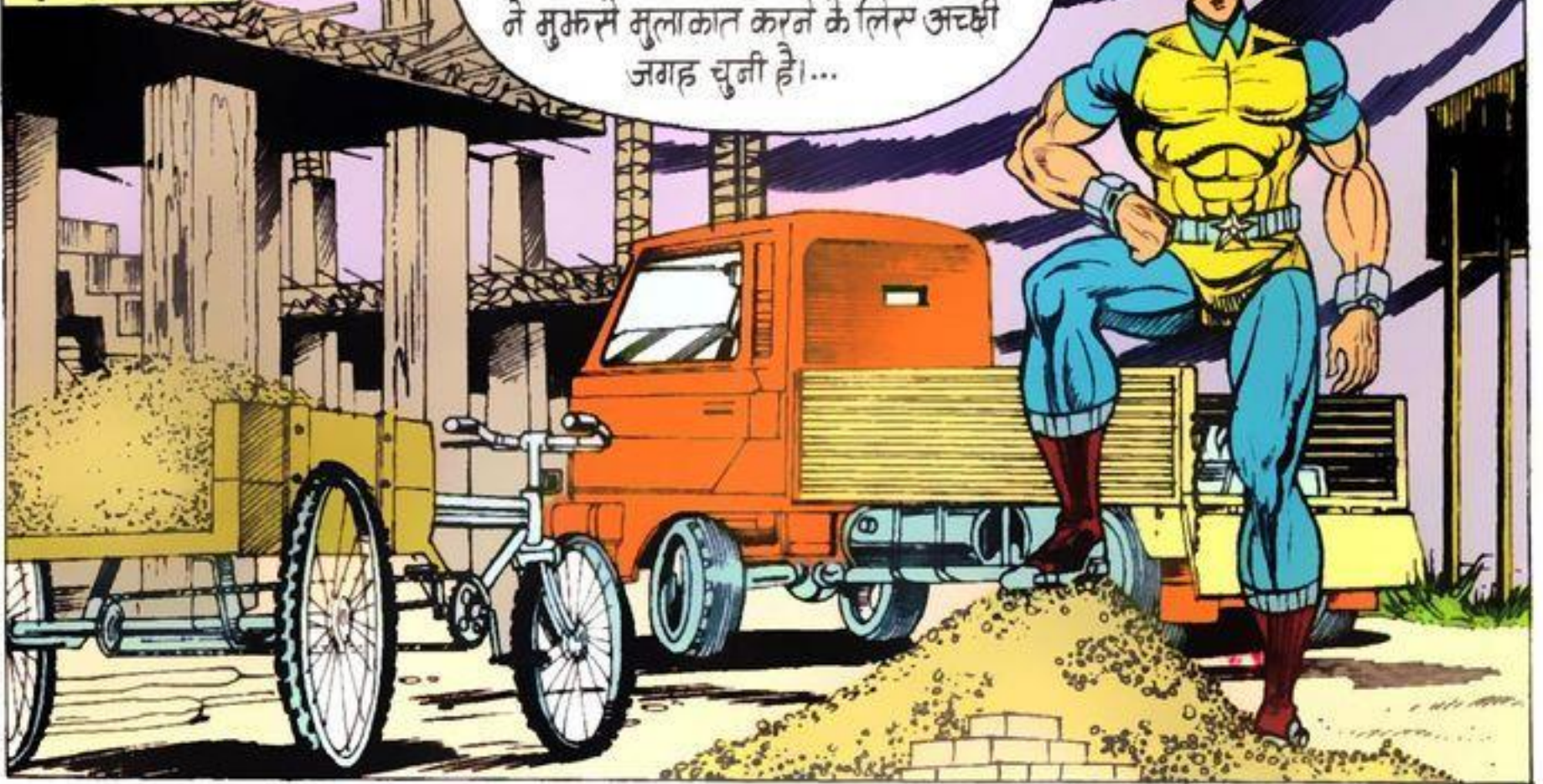
अब या तो तुम मुझे रोक लो, और या अपने बाप की जान को शरीर से निकलने से रोक लो।
तुम अच्छी तरह से जानते हो कि मैं पापा को बचाने ही जाऊंगा! पर यह न समझो कि मैं तुमको छोड़ जाऊंगा! तुमको मेरे दोस्त भागने से रोके रखेंगे!
गुर्र्र्र... वाऊ वाऊ!
ध्रुव के गले से एक गुर्राहट उभरी-
और चारों तरफ से गली के आवारा कुत्ते आकर नक्षत्र पर टूट पड़े-
ओह! तो तुम मुझे इन कुत्तों से रोकने की सोच रहे हो?
पर मेरे पास इनसे लड़ने का वक्त नहीं है! तुम्हारे दोस्तों से मेरे दोस्त निपटेंगे!
नक्षत्र के भी गले से एक चीख निकली-
पर वह चीख कोई सुन नहीं पाया-
सिवाय उस उजाड़ इमारत में रहने वाले चमगादड़ों के! क्योंकि वह एक पराध्वनि चीख थी-
जिसकी प्रैक्टिस, नक्षत्र ने सर्कस के जानवरों को सधाने के लिए की थी-
कुछ ही पलों में, हमला करने वाले कुत्ते, अपनी ही जान बचाने के लिए भाग रहे थे-
अब ये कुत्ते मुझे परेशान नहीं करेंगे! अब मैं आराम से पिताजी के शव को ले जा सकता हूं!
नक्षत्र के शव को हाथ लगाते ही-

'शव' में हरकत होने लगी–
तुमको इतना तो सिखाया ही गया होगा, मिस्टर नक्षत्र...
... कि लड़कियों को हाथ लगाने से पहले उनकी इजाजत लेते हैं!
चंडिका! तुम यहां कैसे?
... इस लड़की को तो तेरा साथ देने की सजा मिलेगी ही ...
चंडिका! यानी ध्रुव इस लड़की को जानता है! यानी नक्षत्र के साथ धोखा किया ध्रुव ने! ...
... मेरे पिता कीलाड़ा को लाने की आड़ में इस लड़की को ले आया! ...
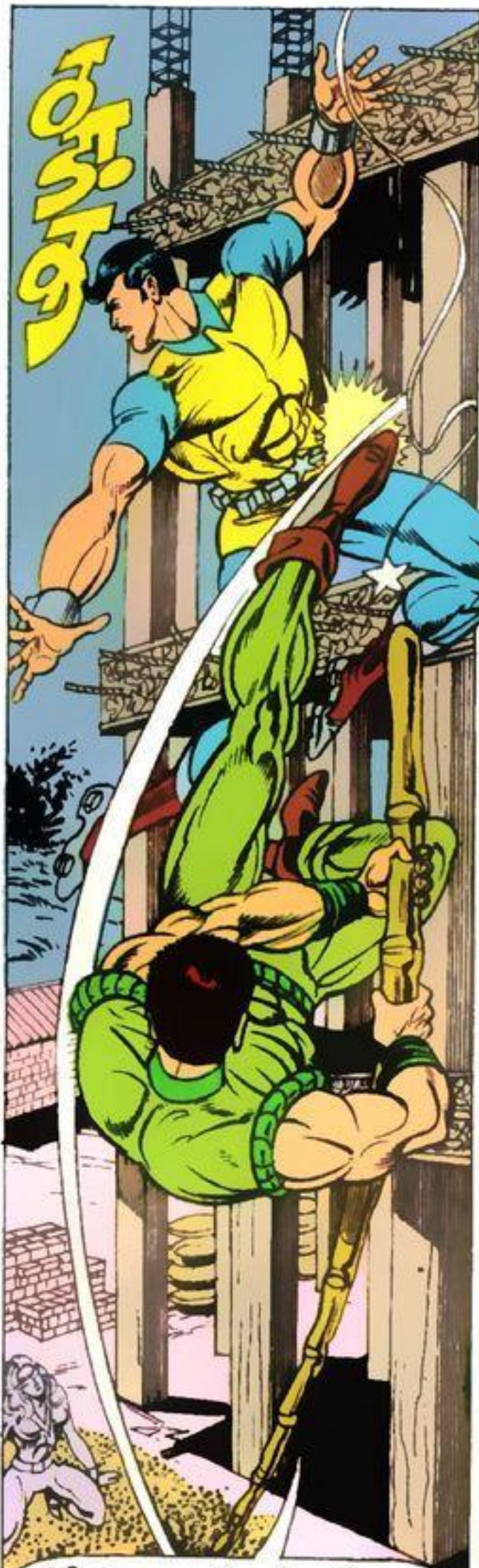
पर नक्षत्र का मुकाबला इस वक्त एक से नहीं, बल्कि दो लोगों से था-
तुम पापा... मतलब अपने पापा को बचाओ, ध्रुव! मैं इससे निपट लेती हूं!
पर तुम एकाएक कहां से आ गईं? तुमको इस चक्कर का पता कैसे चला?
यह फिर कभी बताऊंगी ध्रुव! अभी न तो मेरा ध्यान भटकाओ, और न ही अपना!...
...दरअसल मुझे तो भइया को फोन पर बोलते हुए सुनकर ही गड़बड़ का शक हो गया था! इसीलिए मैं चंडिका के रूप में भइया के पीछे लग गई थी। जब भइया अस्पताल से गाड़ी में लाश लेकर निकला तो मैं गाड़ी के नीचे ही लटकी हुई थी। रास्ते में मौका मिलते ही मैं गाड़ी में चढ़ गई, और लाश को स्टेंड के नीचे खिसकाकर खुद चादर लपेट कर लेट गई थी!
...लेकिन अब तू भी न तो अपने बाप को बचा पाएगा, और न ही अपने आप को!
चंडिका, अच्छी फाइटर तो जरूर थी, लेकिन नक्षत्र के स्तर की योद्धा नहीं थी-
परन्तु फिर भी वह नक्षत्र को ध्रुव के पीछे, जाने नहीं दे रही थी-

और यही वह वक्त था, जब चेरी और शॉट, घटनास्थल के समीप पहुंच चुके थे-
कुछ गड़बड़ हो गई लगती है चेरी! नक्षत्र किसी लड़की से उलझा हुआ है, और ध्रुव ऊपर लटके कमिश्नर राजन की तरफ चढ़ रहा है!
हमको नक्षत्र की मदद करनी होगी! तुम जाकर उस लड़की को रोको, ताकि नक्षत्र ध्रुव के पीछे जा सके! मैं यहीं से 'डॉर्ट गन' के द्वारा तुम लोगों को कवर किए रहूंगा!
पर जाने से पहले अपना चेहरा ढकना मत भूलना! कमिश्नर अगर होश में हुआ तो तुमको पहचान लेगा!
नक्षत्र, अपनी लाख कोशिशों के बगैर भी ध्रुव के पीछे नहीं जा पा रहा था-
यह लड़की मुझे ध्रुव तक जाने नहीं देगी! और तब तक ध्रुव कमिश्नर को बचा लेगा! ध्रुव को रोकना ही होगा!
और कुत्तों को झंझोड़ना छोड़कर, चमगादड़ों की टोली, ध्रुव पर टूट पड़ी-
नक्षत्र के गले से एक बार फिर एक बेआवाज चीख निकली-
कमिश्नर राजन तक लगभग पहुंच चुका ध्रुव, एक बार फिर नीचे फिसल गया-

और साथ ही साथ नक्षत्र भी ध्रुव के पीछे जाने के लिए आजाद हो गया-

अरे! तुम कौन?
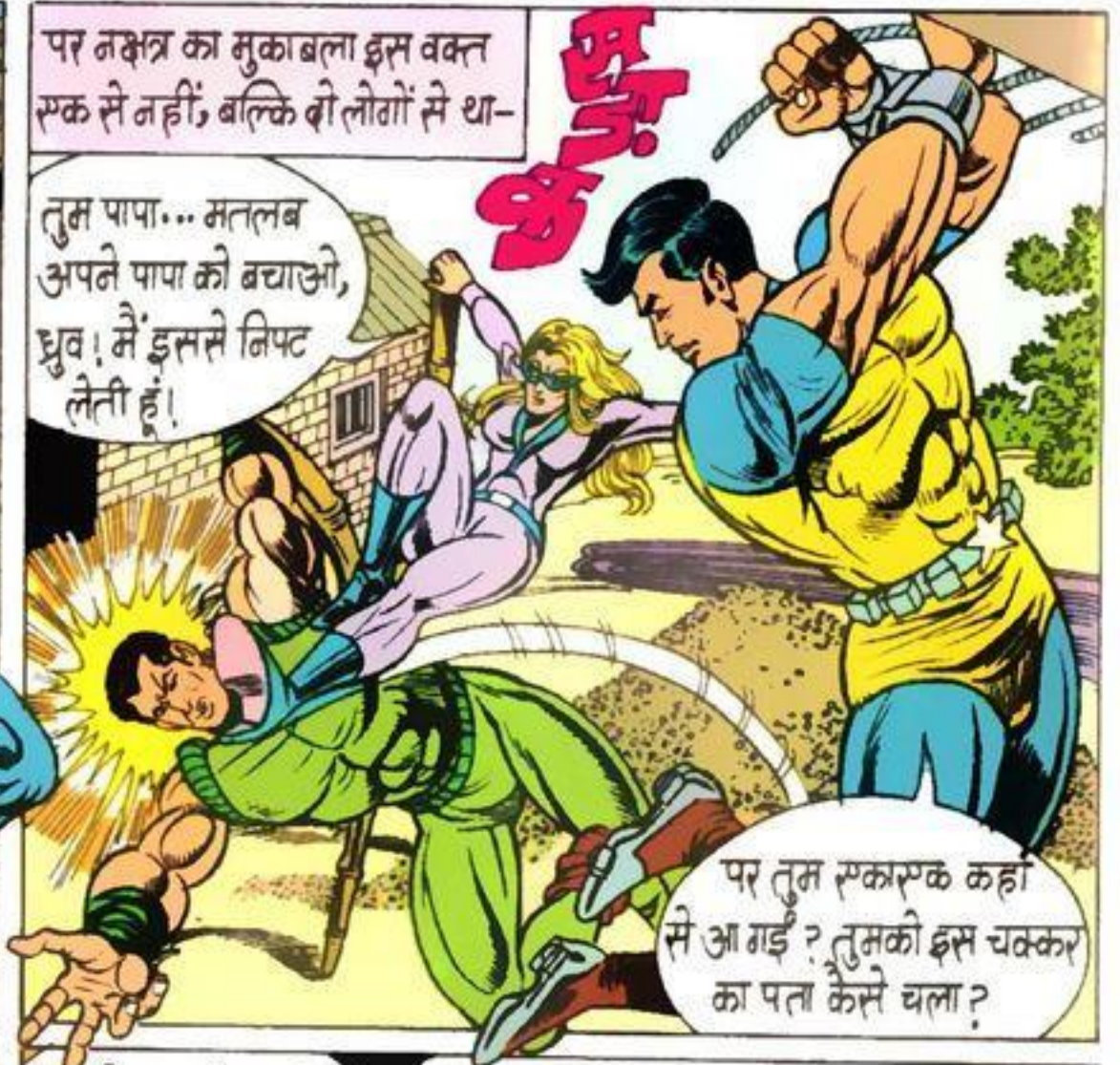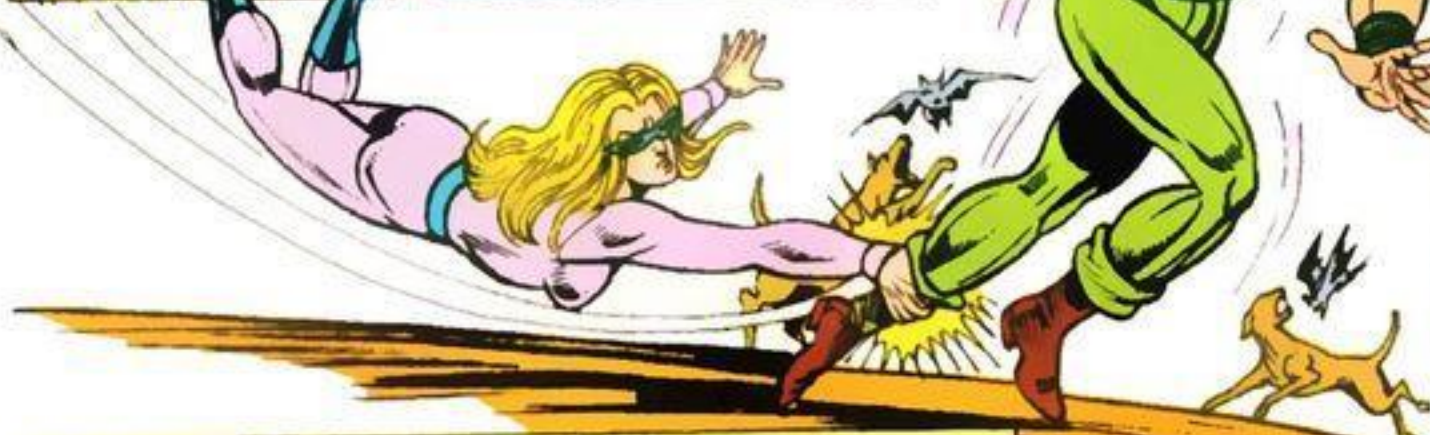
तुम कमिश्नर और ध्रुव को खत्म करने का प्रण पूरा करो, नक्षत्र! इस लड़की से मैं निपट लूंगी!

अरे! यह तो चेरी है! अच्छा हुआ कि ये मेरी बात न मानकर वापस आ गई।

वरना गड़बड़ हो जाती!

नक्षत्र, ध्रुव के पीछे जाने के लिए कदम बढ़ा रहा था-

★ ध्रुव की पाउच बेल्ट में सिग्नल फ्लेयर के अलावा और भी कई तरह की चीजें मौजूद रहती हैं।

और ध्रुव अभी भी बीच में ही लटका हुआ था-
तड़क
चंडिका भी चेरी को पार करके अपने पापा की मदद के लिए नहीं जा पा रही थी-
यह लड़की मुझे पेशेवर लड़ाका नहीं लग रही है! लेकिन फिर भी इसकी कलाबाजी की वजह से मैं इसको अच्छी तरह से पीट नहीं पा रही हूं।...
... और यह मुझ पर वार किए जा रही है। यह जरूर कोई पेशेवर कलाबाज है। जिम्नास्टों जैसे बदन को तोड़-मरोड़ रही है। इसका ध्यान बंटाना होगा! ...
भड़ाक
... और यह काम यह मेंढक करेगा। कहां भागता है, फुदकू?
चेरी, चंडिका की यह हरकत नहीं देख पाई-
टर्रर्रर्र
और चेरी के अगली बार चंडिका की तरफ लपकते ही मेंढक उसके टॉप के अन्दर था-
अरे! यह... यह तो मेंढक... मेंढक...
चेरी का खूंखार जानवरों से तो रात-दिन पाला पड़ता था-
लेकिन कपड़े के अन्दर घुसे मेंढक से कभी सामना नहीं हुआ था-

★ बांड के बारे में जानने के लिए पढ़ें-प्रतिशोध की ज्वाला

चेरी के अगले वार ने, चंडिका के अंधेरे में डूबते दिमाग की बेहोशी की तरफ एक कदम और धकेल दिया—
तड़ाक
और साथ ही साथ, चेरी की नजर खुली वैन के पीछे पड़ गई—
ये कुत्ते, वैन के पीछे की तरफ क्यों लपक रहे हैं! इनकी गुर्राहट से तो ऐसा लगता है, जैसे इनको कुछ खाने की चीज मिल गई है!
वैन के पीछे जाते ही चेरी को कुत्तों के गुर्राने का कारण पता चल गया—
क्याऊं!
तड़
य... यह तो आकाश की लाश है! नक्षत्र... नक्षत्र! तुम्हारे पिता की लाश यहां पर है! जल्दी नीचे आओ! मैं इसको ले जाकर गाड़ी में रख देती हूं!
तुम पिताजी की लाश लेकर यहां से निकल जाओ! मैं कमिश्नर को खत्म किए बगैर वापस नहीं आऊंगा!
वरना मेरे पिता की आत्मा मुझे हमेशा कोसती रहेगी!
समय धीरे-धीरे मौत की घड़ी की तरफ बढ़ रहा था! तीन-चार बूंदें और, राजन मेहरा की जिन्दगी की डोर तोड़ देने वाली थीं—
और ध्रुव अभी भी कमिश्नर राजन से काफी दूर था—
तू शायद मुझे हरा दे, ध्रुव! लेकिन तब तक तेरा बाप भी जिन्दगी की लड़ाई हार चुका होगा!

यह सही कह रहा है।... यह होश में रहते तो मुझे पापा तक जाने नहीं देगा। और इसको बेहोश कर पाना बहुत मुश्किल काम लग रहा है! क्योंकि एक तो यह वैसे ही एक कुशल लड़ाका है, और दूसरे बदले की भावना ने इसके जोश की आग में घी डाल दिया है।...
...अब प्लान बदलना पड़ेगा! पापा के पास अगर मैं नहीं जा सकता...

?
...तो उनको दूर से ही बचाने का प्रयास करना होगा!
ध्रुव के पास केवल यही एक मौका था-

लेकिन निशाना सच्चा था-
उड़ती ईंट के एक ही वार से सरिया टेढ़ा हो गया, और एसिड की घातक बूंदें गलती रस्सी के बजाए छत पर टपक कर व्यर्थ होने लगीं-
कमिश्नर राजन को बांधने वाली रस्सी के साथ-साथ उनके जीवन की डोर भी टूटने से बच गई थी-

लेकिन इस हरकत ने नक्षत्र को जैसे पागलपन का दौरा पड़वा दिया-
अब तू नहीं बचेगा ध्रुव! नहीं बचेगा तू! लेकिन पहले तेरा बाप मरेगा!...
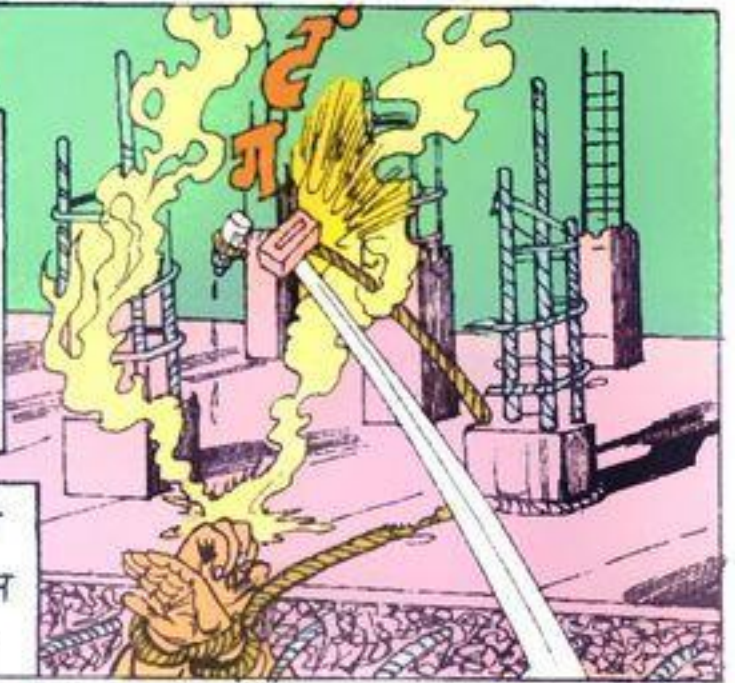
पहले से ही हवा में आधे लटके ध्रुव को इस वार से संभलने और ऊपर चढ़ने में जितना वक्त लगा–
उतनी देर में नक्षत्र तेजी से सीढ़ियां चढ़ता हुआ ऊपर जा पहुंचा था–
अब तू अपने बाप को मरने से नहीं बचा सकता ध्रुव! और अपनी इस असफलता को याद करके तू हर रोज मरता रहेगा!
?
यह दृश्य देख रहे शॉट और चेरी भी चौंक उठे–
यह क्या शॉट? अब नक्षत्र कमिश्नर को गिराकर मार डालेगा। और ध्रुव समय रहते उसको बचा नहीं पाएगा! हमारी मेहनत पर पानी फिर जाएगा!
लेकिन निशाने पर जरा सी देर से पहुंचा–
नक्षत्र के हाथ रस्सी को तोड़ चुके थे। और कमिश्नर राजन का शरीर जमीन से टकराने के लिए बढ़ चुका था–
चटाक
टक
ओह! कोई नक्षत्र पर भी हमला कर रहा है! पर क्यों? खैर, यह सोचने का समय नहीं है! फिलहाल तो पापा को नीचे गिरने से बचाना है!
नहीं, चेरी! मैं ध्रुव के मरने से पहले कमिश्नर की मौत नहीं आने दूंगा!
शॉट की डॉर्टगन से निकलकर डॉर्ट अपने निशाने की तरफ बढ़ चला–
फटाट
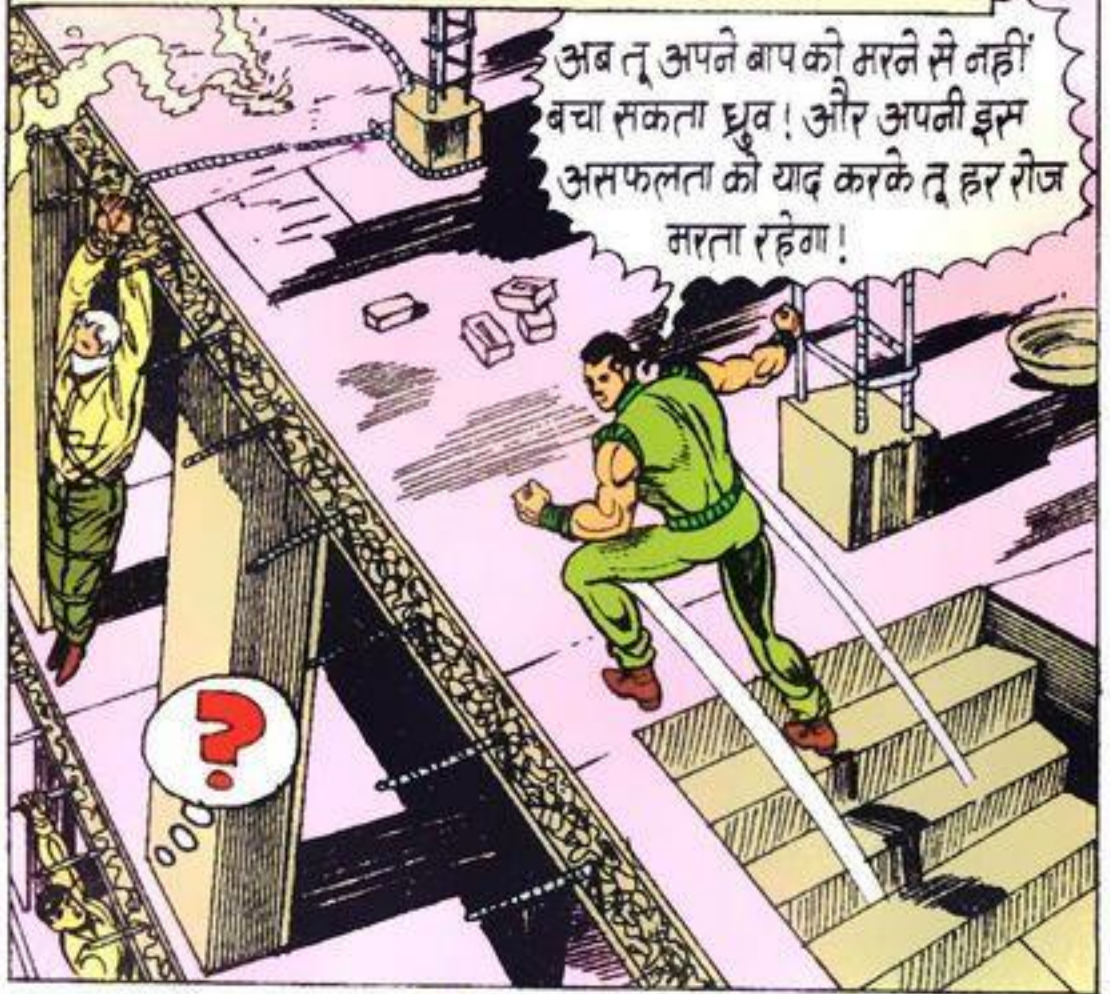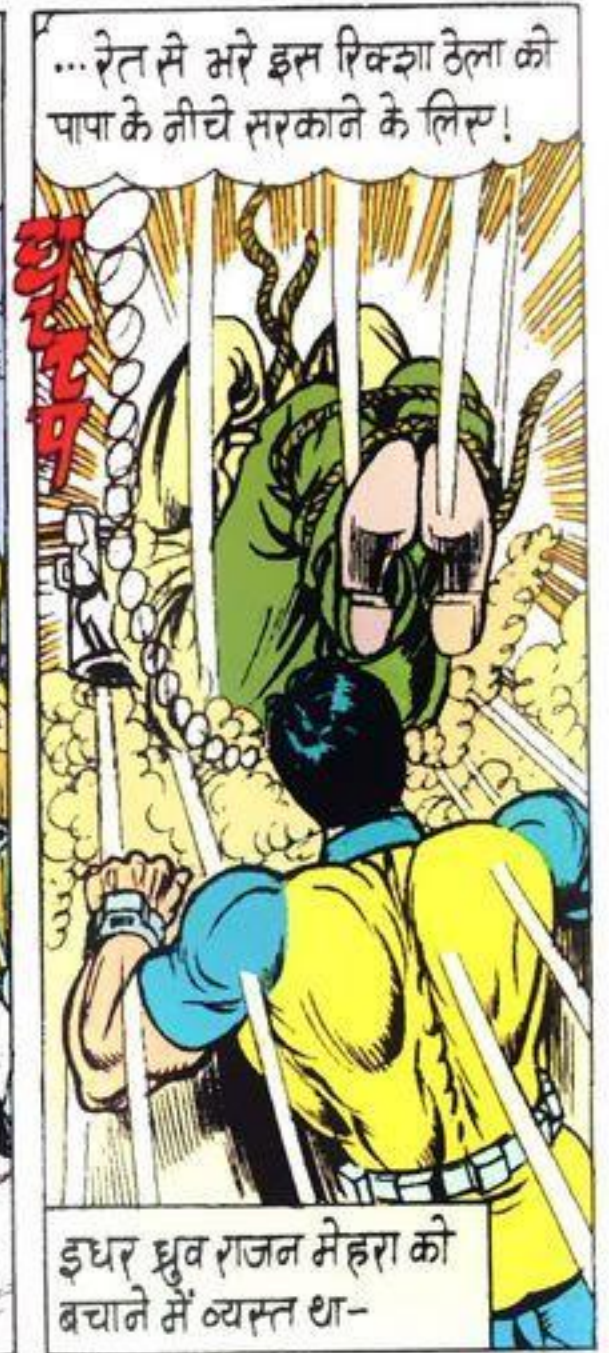
मैं पापा से लगभग दो मंजिल नीचे हूं। यानी मैं जमीन पर पापा से...
ठक

...लगभग दो सैकंड पहले पहुंच जाऊंगा!...
...और इतना समय बहुत है...
कर्रर्र

...रेत से भरे इस रिक्शा ठेला को पापा के नीचे सरकाने के लिए!
धम्म
इधर ध्रुव राजन मेहरा को बचाने में व्यस्त था-

और उधर बड़ी मुश्किल से अपने चकराते दिमाग को काबू में करते हुए-

नक्षत्र नीचे उतर आया था-

चलो, नक्षत्र! भागो!
इस हालत में तो यह कोई प्रतिरोध भी नहीं कर पाएगा!
ओह! तुमने...तुमलोगों ने मुझ पर बेहोशी वाली डॉर्ट क्यों चलाई?
ध्रुव पर चलाई थी, नक्षत्र! हाथ हिलने से निशाना चूक गया!

और फिर-

मुझे यह मामला बहुत टेढ़ा लगता है पापा! सबसे पहली बात कि जिस लाश की शि..नाख्त तक नहीं हो पाई, और न ही खबर अखबारों में छपी, तो उसके बेटे नक्षत्र को कैसे पता चला कि उसको आपने ही मारा है। और फिर उसकी चोरी-छिपे लाश ले जाने पर किसने उकसाया! और इमारत से आपको गिराने की कोशिश करने पर नक्षत्र को डॉर्ट मारकर रोकने की कोशिश क्यों की गई? जबकि उसे रोकने वाले उसके वही दोस्त थे, जिन्होंने उसकी मदद की होगी!
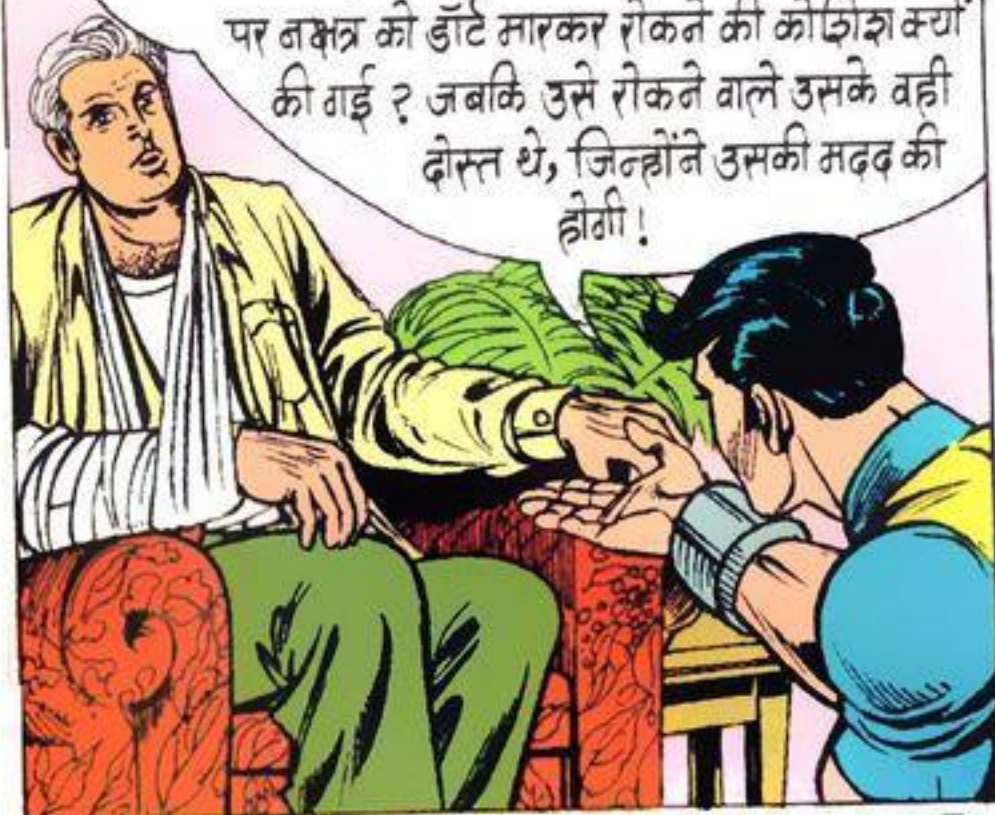
वो... ओ... मेरी गर्दन पर एक डॉर्ट चुभ गई थी!
डॉर्ट चुभ गई थी! तुझे भी डॉर्ट चुभ गई थी! पर कैसे?
'तुझे भी' का क्या मतलब होता है? मैं 'डॉर्ट-गेम' खेल रही थी, हाथ में डॉर्ट थी! गर्दन में खुजली हुई...
...तो मैंने खुजला लिया! और डॉर्ट चुभ गई!
अच्छा! और इसके भी डॉर्ट ठीक वहीं पर चुभी है, जहां पर चंडिका को लगी थी! जब चंडिका को डॉर्ट चुभी, तब मैं उसे ही देख रहा था! यह चक्कर क्या है?
कहीं मेरा पुराना शक सही तो नहीं है कि श्वेता ही चंडिका है! वैसे भी मैंने दोनों को एक साथ कभी नहीं देखा! खैर, इस बारे में फिर कभी गौर से सोचूंगा! अभी तो मुझे नक्षत्र से निपटना है!
भइया को शक हो गया है!
अब मुझे बहुत संभलकर काम करना होगा!
ओह! ये चंडिका ने बीच में मेरा मतलब श्वेता ने बीच में आकर, बात का रुख ही दूसरी तरफ मोड़ दिया!
हां, तो पापा, आप मुझे शुरू से बताइए कि बैंक में वास्तव में क्या हुआ था?
बताने की क्या जरूरत है? मैं तुमको दिखा सकता हूं!
दिखा सकते हैं? पर कैसे?
और इसी वक्त राजनगर की सीमा के पास, सीसपुर में एक चिता में लगी आग बुझ रही थी, और एक दिल में लगी आग को भड़काया जा रहा था-
हम जो कर सकते थे वह हमने कर दिया नक्षत्र! अब जो कुछ करना है, वह तुमको ही करना है!
मैं जब तक अपने पिता के हत्यारे को भी उसकी चिता तक नहीं पहुंचा देता, तब तक चैन से नहीं बैठूंगा!

तुम दो बार असफल हो चुके हो नक्षत्र! और इन दोनों असफलताओं से तुमको एक ही बात सीखने को मिली है। और वह ये कि बिना ध्रुव को खत्म किए तुम कमिश्नर राजन को नहीं मार सकते। पहले ध्रुव को खत्म करना होगा, और फिर कमिश्नर को!

ठीक कहते हैं आप! पहले उस टांग अड़ाने वाले की टांग तोड़नी होगी, और फिर उस हत्यारे कमिश्नर की गर्दन!

मैं अभी निकलता हूं। ताकि इस चिता की आग ठंडी होने से पहले मेरे दिल की आग भी बुझ जाए!

उसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। ध्रुव खुद यहां पर मरने आएगा! मैं उसको जानता हूं। इमारत पर तुमसे हुई मुठभेड़ के बाद वह समझ गया होगा कि तुमको ढूंढने के लिए उसको यहीं पर आना है। तुम उसको यहां पर मारो, अपने इलाके में! सर्कस के बाकी लोग और जानवर तो पहले ही यहां से दूसरी जगह पर जाने के लिए रवाना हो चुके हैं!

तुम यहां पर उसके लिए जाल बिछाओ! ऐसे तुम्हारा दुश्मन ध्रुव आराम से मर भी जाएगा और किसी को कानों-कान खबर भी नहीं होगी!

बॉस ने ध्रुव के बारे में अध्ययन काफी गहन तरीके से किया था—

क्योंकि ध्रुव सचमुच में सीसपुर में लगे, रोहिणी सर्कस की तरफ बढ़ रहा था—

यह शक तो मुझे पहले ही हो रहा था कि नक्षत्र का संबंध किसी पेशेवर कलाबाजी से है। लेकिन इस डॉर्ट ने मुझे यह बता दिया कि वह पेशेवर कलाबाजी किसी सर्कस से संबंधित है। क्योंकि ऐसी डॉर्ट सिर्फ सर्कस वाले ही उत्तेजित जानवरों को काबू में करने के लिए प्रयोग करते हैं!...

N.H. 32

सीसपुर

1

...यह ख्याल आते ही मैंने करीम से राजनगर में या राजनगर के आसपास लगे हुए हर सर्कस के बारे में पता लगाने को कहा था...

...और मुझे पता चला कि इस पूरे इलाके में सिर्फ एक ही सर्कस लगा है। सीसपुर में रोहिणी सर्कस!...

बॉस तो 'ग्लोब सर्कस' में ही तेज करेंट लगने से एक जिन्दा लाश की तरह हो गया था। पुलिस वालों ने उसे हॉस्पिटल कस्टडी में कुछ सालों तक रखा! लेकिन फिर अदालत ने उसकी दयनीय हालत को मद्देनजर रखते हुए, उसकी बाकी की सजा माफ करके उसे छोड़ दिया! और उस 'माफ-सजा' का फायदा बॉस ने इस तरह से उठाया है!

यह रहा 'रोहिणी सर्कस'! लेकिन यह तो यहां से जा चुका है। न जानवरों के पिंजरे हैं, और न ही बड़ा तंबू! सिर्फ एक दो छोटे-छोटे तंबू हैं! क्या बॉस और नक्षत्र मेरे यहां पहुंच जाने की आशंका से भयभीत होकर भाग गए हैं? खैर, इस सवाल का जवाब तो अन्दर जाकर ही मिल सकता है!
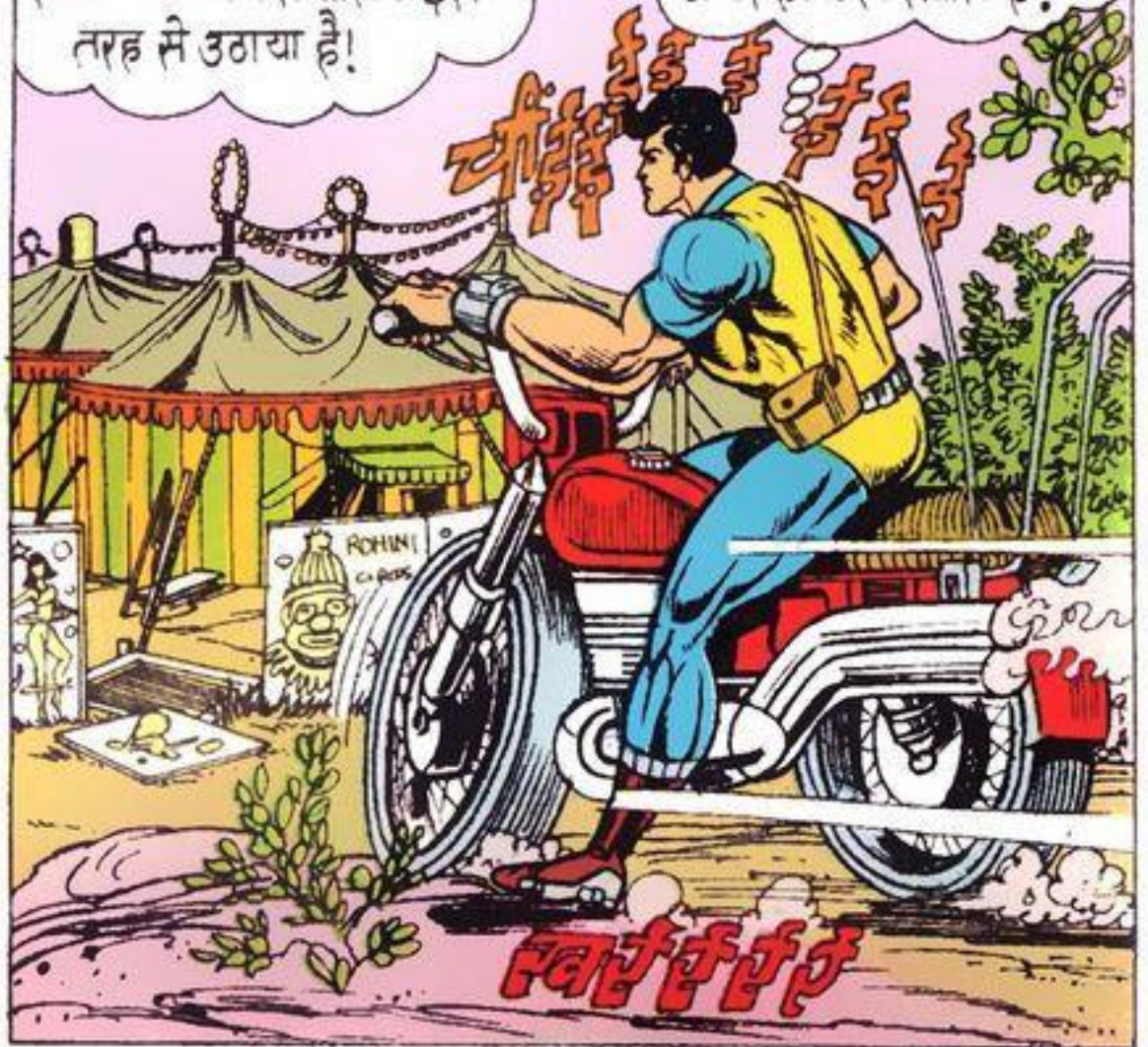
चीईईई

ROHINI CIRCUS

स्कीईईईई

...भागकर तो तुम आए हो!...
...अपनी मौत के पास!
बॉस! नक्षत्र के साथ! मुझे आभास था कि तुमसे मेरी जरूर मुलाकात होगी! अब मैं तुम्हारे सामने ही नक्षत्र को बताऊंगा कि तुम कैसे नक्षत्र का इस्तेमाल कर रहे हो, अपने गन्दे इरादे को पूरा करने के लिए...

बकवास कर रहा है तू! मेरा, तुझसे क्या मतलब? ये तुझे बरगलाने की कोशिश कर रहा है नक्षत्र!
इससे पहले कि ये और बकवास करे, खत्म कर दो इसे!
बॉस का इशारा मिलते ही-

नक्षत्र के तेज धार चाकू अपने निशाने की तरफ उछल पड़े-
आहा! माना कि तुम माने हुए निशाने-बाज हो नक्षत्र! लेकिन मैं भी एक माना हुआ बच सकने वाला हूं।
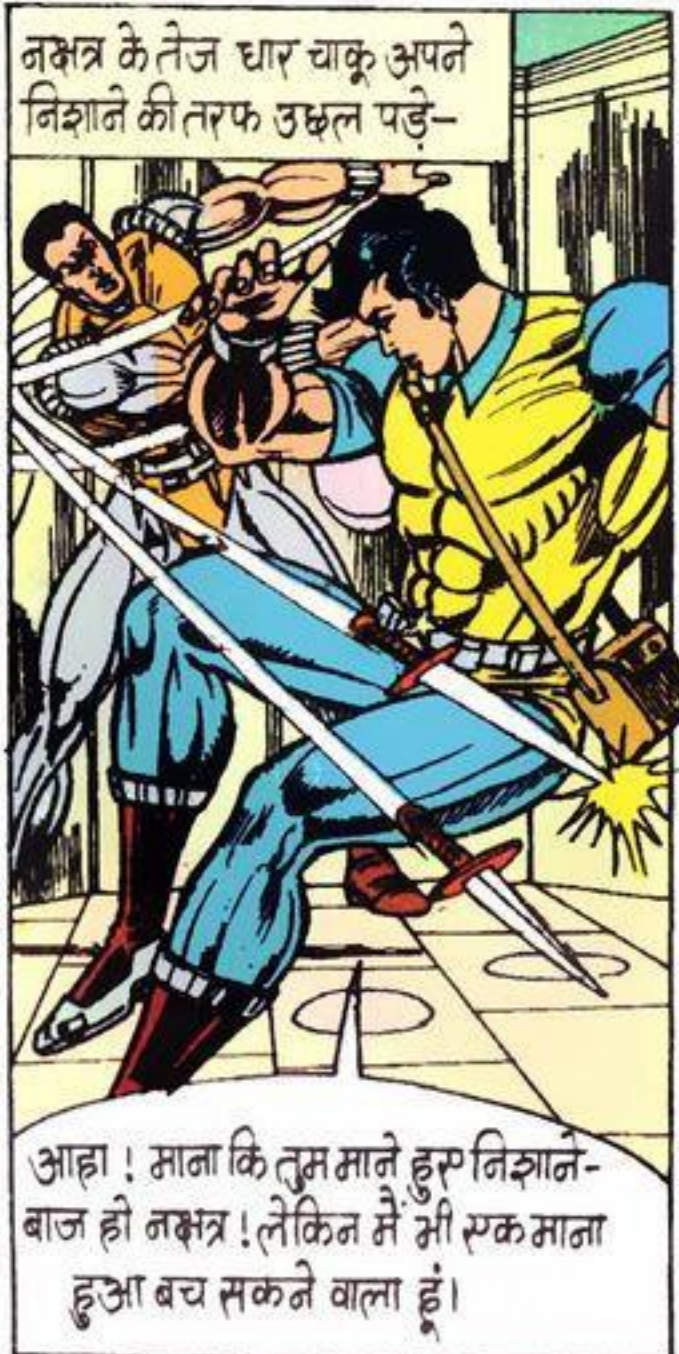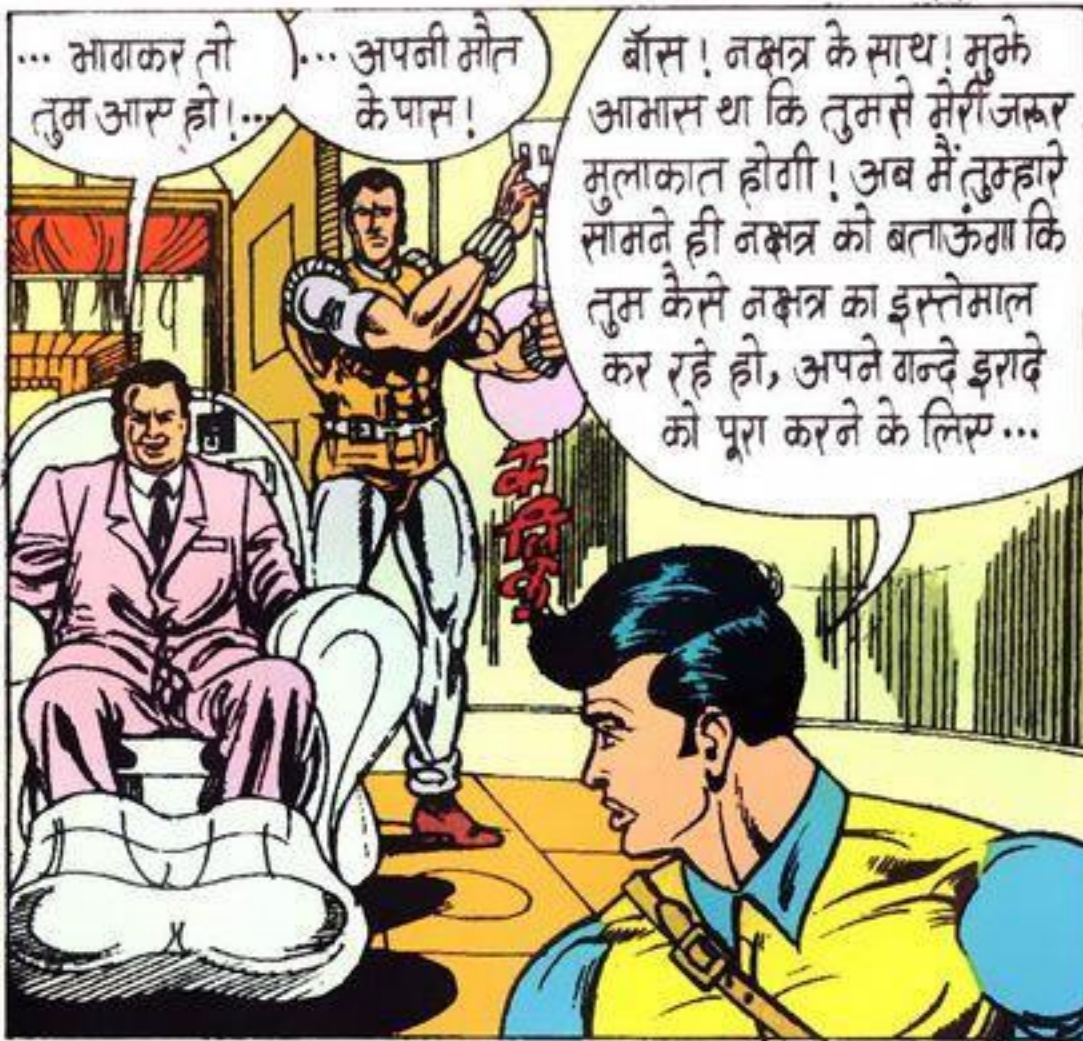
लेकिन ध्रुव ने अपनी तारीफ जरा जल्दी कर दी थी-
अरे! ये चाकू तो इन पेनलों में लगे गोलों से टकराकर वापस मेरी तरफ ही आ रहे हैं। जरूर इन गोलों के पीछे स्प्रिंग लगे होंगे। एक बार फिर इनसे बचना होगा मुझे!
ध्रुव, एक बार फिर बचा तो सही लेकिन चाकू एक बार फिर गोलों से टकराकर ध्रुव की ही तरफ लपक पड़े-

और फिर, नक्षत्र के हाथ से कई और चाकू छूट-छूटकर-
उन दोनों चाकुओं के साथ शामिल हो गए-
देखते ही देखते, ध्रुव चारों तरफ उड़ते हुए चाकुओं के एक गठे जाल में कैद था-
ओह! ये तो हर चाकू बार-बार गोलों से टकराकर मेरी तरफ ही उछल-कर वापस आ रहे हैं। इनसे बचने के लिए मुझे अपना सारा ध्यान केन्द्रित करना पड़ रहा है। पर मैं ज्यादा देर तक इनसे नहीं बच पाऊंगा...
...क्योंकि हर टकराहट के साथ चाकुओं की गति तीव्र होती जा रही है। और हर बचाव के साथ मेरी एनर्जी कम होती जा रही है।
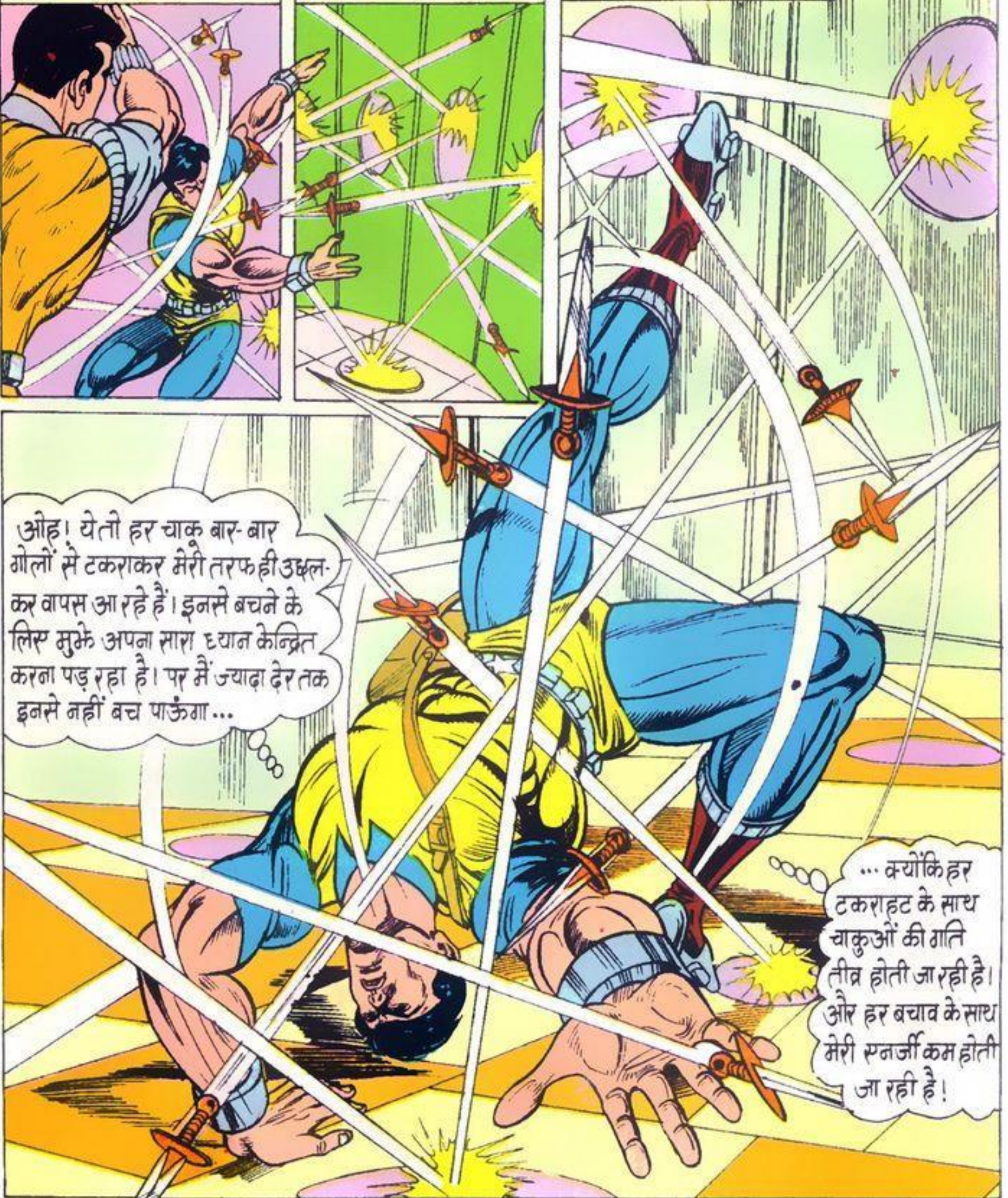
सिर्फ बचने से काम नहीं चलेगा। इनकी काट भी ढूंढनी पड़ेगी। नक्षत्र ने हर चाकू एक खास कोण बांधकर चलाया है, ताकि उसका निशाना मैं ही बना रहूं। यानी हर चाकू की दिशा पहले से ही निर्धारित की गई है। अगर मैं इन चाकुओं के परावर्तित होने की दिशा को समझ सकूं तो शायद बात बन जाए।

अन्दर ध्रुव बचने की जुगत लगा रहा था-

और बाहर बॉस और नक्षत्र ध्रुव की आखिरी चीख सुनने का इन्तजार कर रहे थे-
वह 'कटार-चक्र' से कभी बच नहीं पाएगा... और अगर उसकी किस्मत इतनी तेज हुई कि वह बच गया तो उसके लिए दूसरा जाल एकदम तैयार है!

ध्रुव ने बचने का रास्ता तलाश लिया था-
मैं समझ गया! मैंने लगभग हर चाकू की दिशा को समझ लिया है! अब इन चाकुओं पर वार करने के लिए अगर मैं 'स्टार-ब्लेड' इस कोण से उस गोले पर मारूं...
टन्न

... तो मेरा स्टार ब्लेड इन गोलों की फाइबर सतह से टकराकर परावर्तित होता हुआ एक-एक करके...
टन्न
खन्न

... इन सारे चाकुओं को नीचे गिरा देगा!
ये रहा आखिरी चाकू!

लेकिन ध्रुव जैसे ही तंबू के पीछे पहुंचा, उसे झुक जाना पड़ा-

घर्रर्रर्रर्रर्रर्रर्रर्रर्र

हाहाहा! तू मेरे जाल में फंस गया ध्रुव! अब तू यहीं पर अटका रहेगा, और मैं राजनगर पहुंचकर तेरे बाप को खत्म कर दूंगा!

VTZ

ओह! इस प्लेन से नक्षत्र जरूर सर्कस के करतब दिखाता होगा! पर अब इसका इस्तेमाल वह हत्या के लिए करने जा रहा है!...
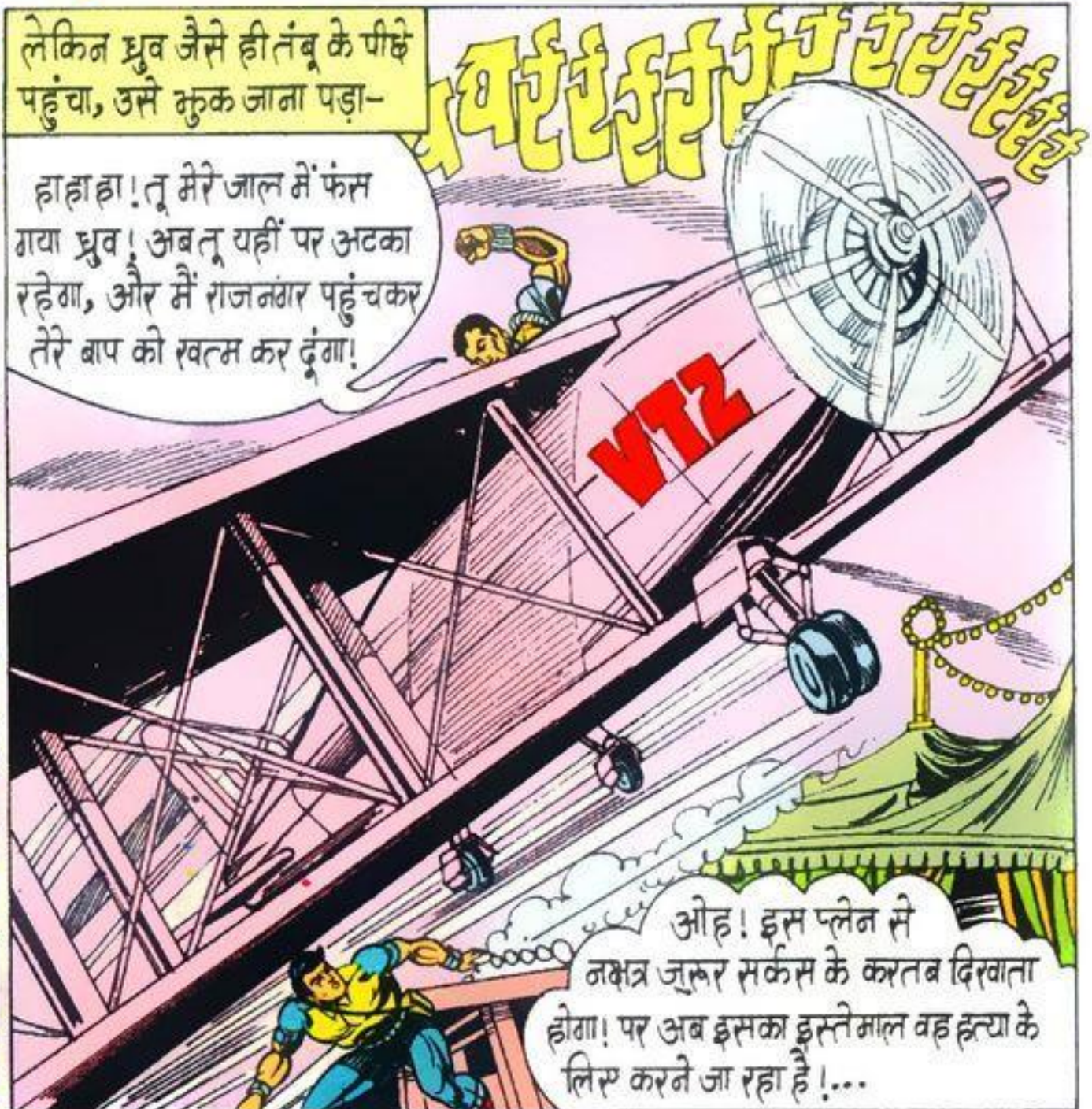
... इसे रोकना होगा! और मेरा यह काम यह तोप कर सकती है...
... जिसका प्रयोग उस करतब को दिखाने में किया जाता है, जिसमें कलाकार तोप में घुसकर दूर तने जाल पर कूदता है!
ध्रुव ने तोप तक पहुंचने-
और उसमें घुसने में जो समय व्यर्थ कर दिया था-
उतनी देर में वह हवाई जहाज हवा में ऊंचा तैर चुका था-
टक
जहाज ऊपर पहुंच चुका है। तोप की स्प्रिंग मुझे उतनी दूर तक फेंक नहीं पाएगी!
मुझे अपनी लम्बी वाली नाइलो स्टील की बनी स्टार लाइन की मदद भी लेनी होगी!
ध्रुव के ब्रेसलेट से स्टार लाइन निकलकर हवा में लपकी-
और प्लेन से जा लिपटी-

अगले ही पल, ध्रुव तेजी से स्टारलाइन पर चढ़ रहा था-
और कुछ ही देर में ध्रुव, प्लेन के ऊपर था-
आहा! मुझे इसी मौके का इन्तजार था ध्रुव! तेरे पिता के पीछे जाने की बात तो बहाना मात्र थी। मैं जानता था कि ये सुनकर तू मेरे पीछे जरूर आएगा। वह तोप तेरी मदद के लिए ही वहां पर रखी गई थी। अब मैं इस प्लेन को और ऊपर ले जा रहा हूं! और साथ-साथ ही मैंने इस प्लेन में लगा 'टाइमबम' का टाइमर भी चालू कर दिया है!
अब ये प्लेन एक धमाके के साथ फट पड़ेगा। मैं तो पैराशूट पहने हुए कूद जाऊंगा, पर तू जब जमीन से टकराएगा, तो तेरे चिथड़े उड़ जाएंगे!

ओह! तुम्हारी बात सुनकर लग रहा है कि तुमने मेरे अपराध के लड़ने के तरीकों का अध्ययन बहुत अच्छी तरह से किया है। लेकिन मेरा रोहिणी सर्कस आने का पहला मकसद तुमको पकड़ना नहीं बल्कि तुम्हारी आंखें खोलना था!
मेरी आंखें तो पहले से ही खुली हुई हैं। पर तेरी आंखें हमेशा के लिए बन्द होने जा रही हैं ध्रुव! क्योंकि टाइमर मैंने तीस सैकंड पर सेट किया था, और वे तीस सैकंड...
...पूरे हो चुके हैं!
नक्षत्र को कूदते देखकर ध्रुव आने वाले खतरे को भांपकर पहले ही कूद चुका था—
मुझे बचाना या मारना तो ऊपर वाले के हाथ में है नक्षत्र! लेकिन तुम इस बैग में रखे वीडियो कैमरे में लगी कैसेट जरूर देख लेना! यह उसी बैंक के सिक्योरिटी कैमरे की कैसेट है, जहां तुम्हारे पिता मारे गए! इसमें उसी समय के घटनाक्रम की रील है! कैमरे के ही प्ले बैक फंक्शन पर तुम इसे देख सकते हो!
और इसे देखकर तुमको यह पता चल जाएगा कि यह षड्यंत्र किसका रचा हुआ था!
कैमरा केस
नक्षत्र को पकड़ाते हुए ध्रुव का शरीर तेजी से जमीन की तरफ बढ़ने लगा—

'स्काई डाइवरों' की तरह मेरे गिरने की गति भी अब एक समान हो गई है। यह अब और तेज नहीं होगी। इसको 'टर्मिनल वेलॉसिटी' कहते हैं। अब मेरा शरीर ५५ मीटर प्रति सैकंड की गति से गिर रहा है। और इस गति पर मैं अपने शरीर को मनचाहे कोण पर मोड़कर मनचाही दिशा में गिरा सकता हूं। अब मुझे एक ही चीज बचा सकती है। और वह है...

...रोहिणी सर्कस का तंबू। इस तंबू के बाहर से गुजरते हुए मैंने इसके अन्दर वह जाल तना देखा था जिस पर झूले का करतब दिखाने वाले कूदते हैं। अब मुझे वह जाल ही बचा सकता है। तंबू की छत की तिरपाल से टकराकर तो मेरी गर्दन भी टूट सकती है। इस तिरपाल का इस्तेमाल स्पीड ब्रेकर की तरह करना होगा!

ध्रुव के ब्रेसलेट से स्टार ब्लेड निकलकर तिरपाल में ऐसे ही छेद करने लगे जैसे लैटर पैड के कागजों के ऊपर होते हैं-

और फिर ध्रुव का शरीर जब तिरपाल से टकराया तो दो काम एक साथ हो गए। ध्रुव के शरीर की गति को इस टक्कर ने कम कर दिया, और ध्रुव के शरीर की टक्कर ने तिरपाल में छेद कर दिया-

और ध्रुव का शरीर उस छेद को पार करता हुआ जाल पर आ गिरा टकराया, उछला और फिर आ गिरा-

ध्रुव बच तो गया था! पर इस आघात से उसका मस्तिष्क कुछ पलों के लिए चकरा गया था-

और यह सारा दृश्य देख रहे ध्रुव के दुश्मन मौके का फायदा उठाने तुरंत वहां पर आ पहुंचे-

लक्ष्य स्थिर था और चलाने वाले का निशाना अचूक-

उसके हर वार में ऐसी प्रचंडता भरी थी, जैसे हर बार ज्वालामुखी फट रहा हो–

तड़ाक

होश में आओ नक्षत्र! पागल हो गए हो क्या?

पागल हो गया था मैं! तूने मुझे पागल बना दिया था! अब मुझे पता चल गया है कि गोली कमिश्नर साहब ने खुद नहीं चलाई थी!...

...वह गोली चेरी ने चलवाई थी! और यह षड्यंत्र जरूर तूने ही रचा था!...

★ नक्षत्र का क्या होगा, यह तो सिर्फ भविष्य को ही पता है। हम तो फिलहाल इंतजार कर सकते हैं और कह सकते हैं कि कहानी **समाप्त**।

GREEN PAGE-65

प्रिय दोस्तो, हैलो!

14 नवम्बर **बाल दिवस** बच्चों के प्यारे चाचा नेहरू के जन्म दिवस पर आपको बधाई। चाचा नेहरू ने सदा देश के उज्ज्वल भविष्य के कर्णधार देश के नन्हे नागरिकों को अपने आदर्श व्यक्तित्व से आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। ऐसी ही प्रेरणा की जरूरत होती है हर बालक को अपने व्यक्तित्व निर्माण की सीढ़ियां मजबूत करने के लिए। **ध्रुव** की अद्‌भुत कला को प्रेरणा मानकर **नक्षत्र** ने सर्कस की कला में महारत हासिल की किन्तु एक दुष्ट ने उसे बरगलाकर अपराध के गहन अंधकार की राह दिखा दी। एक उमदा कलाकार का **भविष्य** बदले की आग में गर्क हो गया। आपकी राह में भी ऐसे बहुत से षड्‌यंत्रकारी आ सकते हैं। जो बुरी आदतें डलवाकर आपको आपकी शिक्षा से भटकाने की कोशिश करेंगे। परन्तु यदि आप **सुपर कमाण्डो ध्रुव** के समान अपने इरादों पर अडिग रहे तो आप भी भविष्य में ध्रुव तारे के समान ही पूरे ब्रह्माण्ड में अलग ही चमक से प्रकाशमान दिखाई देंगे। प्रस्तुत चित्रकथा के विषय में अपने विचारों से अवश्य अवगत कराएं।

प्रिय मित्रो, **तानाशाह** कांटेस्ट नं. 1 के सभी विजेताओं की सूची हम **नागराज** के विशेषांक **सपेरा** #120 में दे चुके हैं। **तानाशाह** कांटेस्ट नं.2 के प्रथम पुरस्कार विजेताओं की सूची हमने प्रस्तुत कॉमिक **जंग** में छापी है। **तानाशाह** कांटेस्ट नं.2 के द्वितीय व तृतीय पुरस्कार विजेताओं की सूची **डोगा** के विशेषांक **भूल गया डोगा** #122 में छापी जा रही है। इसी सीरीज के अन्य कांटेस्टों के विजेताओं की सूची हम आने वाले विशेषांकों में छापते रहेंगे।

कोबी और भेड़िया को पसंद करने वाले हमारे बहुत से पाठकों के पत्र आए जिनमें उन्होंने **कोबी और भेड़िया** के लेखक व चित्रकार का नाम जानना चाहा है। हमारी जल्दबाजी में हुई गलती की वजह से यह नाम छपने से छूट गए जिसके कारण पाठकों को हुई असुविधा के लिए हमें खेद है। इस विशेषांक के लेखक हैं **तरुणकुमार वाही**, सहयोग **विवेक मोहन, संजय गुप्ता**, चित्रकार **धीरज वर्मा**, इंकिंग **राजेन्द्र धौनी**, रंग सज्जा व कैलीग्राफी की है **तुलाराम आजाद** ने।

नागराज फैन क्लब

हम **नागराज फैन क्लब** के अपने सभी सदस्यों को **फैंग**-11 भेज चुके हैं।

प्रिय पाठको, वर्ष 1999 के नये सदस्यों के लिए **नागराज फैन क्लब** का सदस्यता शुल्क हमने तीस रुपये से बढ़ाकर सत्तर रुपये कर दिया है। **नागराज फैन क्लब** के जो सदस्य अपनी सदस्यता वर्ष 1999 के लिए रिन्यु करना चाहते हैं उनके लिए सदस्यता शुल्क पचास रुपये होगा व जो सदस्य अपने मित्रों या रिश्तेदारों को भी सदस्य बनाना चाहेंगे उनके लिए भी वार्षिक सदस्यता शुल्क पचास रुपये ही होगा। वर्ष 1999 के लिए सभी सदस्य मनीआर्डर द्वारा अपना व अपने मित्रों का सदस्यता शुल्क शीघ्र भेज दें। पूर्व सदस्यों को दोबारा सदस्यता फार्म भरने की कोई आवश्यकता नहीं है। हां, नये सदस्यों के लिए फार्म हम उन्हें जल्दी ही भेज देंगे। सदस्यता शुल्क जमा कराने की अन्तिम तिथि है **31 दिसम्बर,1998**। इस विषय में यदि आपको कोई जानकारी प्राप्त करनी है तो हमें शीघ्र लिखें।

हमारे पाठकों के लिए एक और खुशखबरी। **नेशनल नेटवर्क** पर रविवार को प्रसारित होने वाला धारावाहिक **'विराट'** अब **राज कॉमिक्स** में भी प्रकाशित होने जा रहा है।

बिहार राज्य के हमारे **फैन क्लब** सदस्यों के लिए हार्दिक निमंत्रण 26 नवम्बर,1998 से 7 दिसम्बर, 1998 तक **गांधी मैदान, पटना** में आयोजित हो रहे **पुस्तक मेले** में वे प्रथम बार लग रहे **राज कॉमिक्स** के बुक स्टाल पर अवश्य पधारें व **राज कॉमिक्स** व **नागराज नावल्टीज** की आइटम्स 20 प्रतिशत डिस्काउंट में प्राप्त करें। कृपया अपने साथ अपने सदस्यता कार्ड अवश्य लायें।

पत्र व्यवहार इस पते पर करें: **ग्रीन पेज नं.65, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1 बुराड़ी, दिल्ली-110084.**